।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 10 अंक : 117 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका फरवरी– 2018 30/–प्रति

ऑनलाइन शक्तिपात–दीक्षा प्राप्त करने के लिए लॉग–ऑन करें–

Web : www.the-comforter.org

मंत्र दीक्षा के लिये मोबाइल नम्बर डायल करें -

07533006009

AVSK जोधपुर आश्रम द्वारा पूना (महाराष्ट्र) के विभिन्न विद्यालयों व संस्थानों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (11-18 जनवरी 2018)

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 10 अंक : 117 जोधपुरः- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका **फरवरी – 2018**

वार्षिक 300/– ❋ द्विवार्षिक : 600/– ❋ आजीवन (11 वर्ष) : 3000/– ❋ मूल्य 30/–

❖

संस्थापक एवं संरक्षक :

पूज्य सद्‌गुरुदेव

श्री रामलालजी सियाग

(ब्रह्मलीन)

❖

सम्पादक :

रामूराम चौधरी

कार्यालय :

Spiritual Science

पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

9784742595

E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 003
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अ नु क्र म

परमसत्ता के पथ की खोज.......................4
भारत का उत्थान और पतन (सम्पादकीय).......................5
निष्काम कर्म योगी 6
प्रार्थना.......................7
उद्देश्य और गुरुदेव का पत्र.......................8
The Superamental Manifestation Upon the Earth 9
हृदय मंथन 10
योगियों की आत्मकथा 11
योग के आधार.......................12
मेरे गुरुदेव.......................13
सद्‌गुरु आज्ञा.......................14
जगद्‌गुरु का दिव्य मंत्र.......................15
धुन की पक्की चिड़िया (कहानी).......................16
श्रद्धा और शक्ति.......................17
सद्‌गुरुदेव की अमर तस्वीर.......................18
चित्र पृष्ठ.......................19–22
अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति 23–26
हठयोग.......................27
सद्‌गुरुदेव का पत्र.......................28
चेतना का विज्ञान.......................29
अहं से मुक्ति.......................30
समाधि.......................31
सिद्धयोग.......................32
आराधना द्वारा प्रातिभ ज्ञान की प्राप्ति.......................33
ध्यान और समाधि अवस्था में भविष्य को देखना.......................34
अपने वास्तविक स्वरूप में रूपान्तरण.......................35
शेष पृष्ठ सम्पादकीय.......................36–37
ध्यान विधि.......................38

www.the-comforter.org

परमसत्ता के पथ की खोज

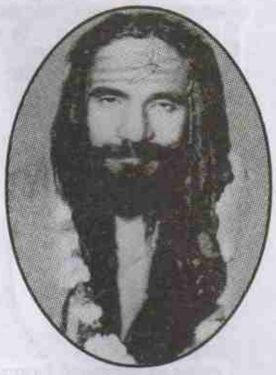

सद्‌गुरुदेव का ''सच्चा त्याग''।

''उस परमसत्ता तक पहुँचने का रास्ता जीव मात्र के कल्याण के लिए खोजा। ऐसे ही परम हितैषी और दयालू संत सद्‌गुरु संसार का कल्याण करने में सक्षम होते हैं। वे अपने जीवन में इस बात की झलक तक नहीं दिखने देते कि वे क्या कर रहे हैं? उस परमसत्ता तक पहुँचने का रास्ता खोजकर, उसका साक्षात्कार करके उसी में लीन हो जाते हैं।

संसार से विदा होने से पहले वे इस अपनी अर्जित परम शक्ति को किसी ऐसे उपयुक्त पात्र को सौंप कर जाते हैं, जो संसार के प्राणी मात्र के कल्याण के लिए उपयोग कर सके। यह होता है ''सच्चा त्याग''। अपनी जीवन भर की कमाई को अनायास ही संसार की भलाई के लिए अर्पित करके चुपचाप चले जाते हैं।''

www.the-comforter.org

–समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

''असंख्य ऋषि-मुनियों की कमाई का अमर फल अपनी घोर तपस्या से बाबा श्री गंगाई नाथ जी महायोगी (ब्रह्मलीन) ने संचित किया। फिर अहैतुकी कृपा कर जगत् कल्याण के लिए अपनी संपूर्ण सामर्थ्य, समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग को अर्पित कर, 31 दिसम्बर, 1983 को परमत्ता में विलीन हो गए। सद्‌गुरुदेव ने इस दिव्य संजीवनी मंत्र को विश्व मानवता के हृदय पटल पर स्थापित किया। मानव मात्र को इस ज्ञान का अधिकारी समझकर, शक्तिपात दीक्षा दी। **सद्‌गुरुदेव ने अपने जीवनकाल में ही यह आदेश दे दिया कि मेरे जाने के बाद मेरी तस्वीर काम करेगी। यह घटना जगत् में पहली बार घटी है। जबकि प्रकृति का नियम है कि जो जगह खाली हो गई, उसकी जगह दूसरा व्यक्ति लेता है लेकिन सद्‌गुरुदेव की जगह सद्‌गुरुदेव की तस्वीर ही काम करेगी।** इसलिए जो जीव अपना कल्याण चाहता है, वो सद्‌गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनकर, सघन जप व नियमित ध्यान कर, अपना सर्वांगीण विकास कर सकता हैं।''

संदर्भ-सिद्धयोग पृष्ठ-131

सम्पादकीय .... भारत का 'उत्थान' और 'पतन'

'राष्ट्रीयता का मतलब केवल राजनीति से नहीं है। राष्ट्रीयता का मतलब है-हमारा धर्म। राष्ट्रीयता ही हमारा उपासना पंथ है। राष्ट्रीयता ही हमारी श्रद्धा है। यही बात दूसरे शब्दों में इस प्रकार कही जा सकती है। हमारा सनातन धर्म ही हमारी राष्ट्रीयता है।' इस हिन्दू राष्ट्र का जन्म सनातन धर्म के साथ ही हुआ है। सनातन धर्म की छत्र-छाया में ही इस हिन्दू राष्ट्र की प्रत्येक चाल-ढाल और प्रत्येक व्यापार विकसित हुआ है। इस सनातन धर्म के मार्गदर्शन में ही हिन्दू राष्ट्र का विकास सुनिश्चित है।

भारतीय सभ्यता और संस्कृति में अनेक उतार-चढ़ाव आए हैं। अनेक संकटों और भयंकर विद्रोही तुफानों का सामना करना पड़ा है। हमारी सभ्यता और संस्कृति का पूरे विश्व में डंका बजता था। जिसने भी अमर ज्ञान पाया, यहीं से पाया।

हमारे वेद और उपनिषद इसके अमर साक्षी हैं। लेकिन भारत को कई बार पतन के काल से गुजरना पड़ा। वर्तमान में भारत पतन के काल से गुजर रहा है। भारत पर विदेशी आक्रमण हुए, धर्म और दर्शन लुप्तता के कगार पर थे। अनेक विकार पैदा हुए। फिर भी आज तक भारत (सनातन धर्म) अजर-अमर है। उसका मूल सुरक्षित है, तभी तो इकबाल ने कहा हैः-

युनानो मिस्रो रोमा,
सब मिट गये जहाँ से।
अब तक मगर है बाकि,
नामो निशां हमारा। ।
कुछ बात है कि
हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन,
दौरे जहाँ हमारा।।

भारतीय संस्कृति ने बहुतेरे तुफानों को झेला। उस पर ज्वालामुखी फटे हैं, हंसों का चोला ओढ़कर, बगुले पर बगुले, आये हैं। बहुत बार ऐसा लगा कि बस, अब इसका अंत आ गया, परन्तु वह फिर से एक नया जन्म लेकर खड़ी हो गई। इस संस्कृति का बिरवा वेदों से निकला था। वेदों ने ही संस्कृति के आदि काल में मनुष्य को भावी उपलब्धियों की एक झांकी दी थी और ''नूतन-सूर्योदय'' का ''नूतन-जीवन'' के रूप में स्वागत करना सिखाया था। श्री अरविंद कहते थे कि वेदों का अंतःप्रकाशन उन ऋषियों को प्राप्त हुआ था जो ''योग'' में निष्णांत थे, जिन्हें अंतदृष्टि प्राप्त थी, जिनकी विशुद्ध प्रज्ञा में शब्द का स्वामी अपने शब्द उड़ेलता था। और यह आदि-अनादि ज्ञान अनगिनत पीढियों से सुरक्षित है।

स्वामी श्री विवेकानंद जी ने अमेरिका में भाषण देते हुए 'भारत के ''उत्थान'' और ''पतन'' के विषय का जीवंत चित्रण प्रस्तुत किया- जिसको पूज्य सद्गुरुदेव ने विशेष महत्त्व दिया तथा अपने कर कमलों से लिखकर सम्पादकीय में लिखने का आदेश दिया था, जिसकी पुनर्रावृत्ति की जा रही है-

''प्रत्येक पतन के बाद हिन्दू-धर्म भी श्री भगवान् के करूणापूर्ण नियंत्रण में निरोग होकर पूर्वापेक्षा अधिक यशस्वी और वीर्यवान हुआ है-इतिहास इस बात का साक्षी है। **प्रत्येक पतन के बाद पुनरुत्थित-समाज अन्तर्निहित सनातन पूर्णत्व की ओर भी प्रकाशित करना है;** और सर्वभूतों में अवस्थित अंतर्यामी प्रभु भी अपने स्वरूप को प्रत्येक अवतार में अधिकाधिक अभिव्यक्त करते हैं।

बार-बार यह भारत-भूमि मूर्च्छापन्न अर्थात् धर्म लुप्त हुई है, और बारम्बार भारत में भगवान् ने अपने आविर्भाव द्वारा इसे पुनरूज्जीवित किया है।

किंतु प्रस्तुत दो घड़ी में ही बीत जानेवाली वर्तमान गंभीर ''**विषाद-रात्रि**'' के समान और किसी भी ''**अमानिशा**'' ने अब तक इस ''**पुण्यभूमि**'' को आच्छादन्न नहीं किया था। इस पतन की ''**गहराई**'' के सामने पहले के सभी पतन ''**गोष्पद**'' (गाय के खुर) के समान जान पड़ते हैं।

इसलिए इस ''**प्रबोधन**'' की समुज्ज्वलता के सम्मुख पूर्व युग के समस्त उत्थान, उसी प्रकार ''**महिमाविहीन**'' हो जावेंगे, जिस प्रकार '**सूर्य**' के प्रकाश के सामने ''**तारागण**''। और इस ''पुनरुत्थान के महावीर्य की तुलना में प्राचीन काल के समस्त उत्थान '' **बालकेली**'' से जान पड़ेंगे।

यह पुनरुत्थान ''लुप्त विद्या'' के भी पुनः ''आविष्कार'' में भी सक्षम होगा। इसके प्रथम निर्देशनस्वरूप परम कारूणिक श्री भगवान् पूर्व सभी युगों की अपेक्षा अधिक पूर्णता प्रदर्शित करते हुए '' **सर्वभाव-समन्वित**'' एवं ''**सर्वविद्यायुक्त**'' होकर युगावतार के रूप में अवतीर्ण हुए हैं।''

शेष पृष्ठ 36 व 37 पर....

निष्काम कर्म योगी संसार के सम्पूर्ण कर्मों को करता हुआ नहीं बँधता है।

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के 18वें अध्याय में स्पष्ट कहा है :-

सर्वकर्माण्यपि सदा
कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः।
मत्थसादादवाप्नोति
शाश्वतं पदमव्ययम्।। 56।।

मेरे परायण हुआ निष्काम कर्म योगी सम्पूर्ण कर्मों को सदा करता हुआ भी, मेरी कृपा से सनातन अविनाशी परमपद को प्राप्त हो जाता है।

चेतसा सर्वकर्माणि
मयि संन्यस्य मत्परः।
बुद्धियोगमुपाश्रित्य
मच्चित्तः सततं भव।। 57।।

सब कर्मों को मन से मेरे में अर्पण करके, मेरे परायण हुआ समत्वबुद्धि रूप निष्काम कर्मयोग को अवलम्बन करके निरन्तर मेरे में चित्तवाला हो।

मच्चितः सर्वदुर्गाणि
मत्प्रसादात्तरिष्यसि।
अथ चेत्त्वमहंकारान्न
श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि।। 58।।

तूँ मेरे में निरन्तर मनवाला हुआ, मेरी कृपा से जन्म-मृत्यु आदि सब शंकाओं से तर जायेगा और यदि अहंकार के कारण नहीं सुनेगा (तो) नष्ट हो जायेगा।

यदहंकारमश्रित्य न
योत्स्य इति मन्य से।
मिथ्यैष व्यवसायस्ते
प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति।। 59।।

जो (तूँ) अहंकार का अवलम्बन करके ऐसे मानता है (कि) मैं युद्ध नहीं करूँगा (तो) यह तेरा निश्चय मिथ्या है। क्योंकि क्षत्रियपन का स्वभाव तेरे को जबरदस्ती युद्ध में लगा देगा।

स्वभावजेन कौन्तेय
निबद्धः स्वेन कर्मणा।
कर्तुंनेच्छप्ति यन्मोहात्
करिष्यस्यवशो पि तत्।। 60।।

हे अर्जुन जिस कर्म को (तूं) मोह से नहीं करना चाहता है, उसको भी अपने स्वाभाविक कर्म से बंधा हुआ, परवश हो कर करेगा।

ईश्वरः सर्वभूतानां
हृद्दशे र्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि
यन्त्रारूढानि मायया।। 61।।

हे अर्जुन ! शरीर रूप यन्त्र में आरूढ हुए संपूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से भ्रमाता हुआ, सब भूत प्राणियों के हृदय में स्थित है।

तमेव शरणं गच्छ
सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परा शान्तिं स्थानं
प्राप्स्यसि शाश्वतम।। 62।।

हे भारत ! सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही शरण को प्राप्त हो, उस परमात्मा की कृपा से परम शान्ति को (और) सनातन परम धाम को प्राप्त हो, उस परमात्मा की कृपा से परम शान्ति को (और) सनातन परमधाम को प्राप्त होगा।

भगवान ने उपर्युक्त श्लोकों से स्पष्ट कर दिया है कि ईश्वर सर्वभूत प्राणियों के शरीर रूपी यन्त्र में आरूढ होकर, सब को भ्रमाता हुआ, अपनी इच्छा से चला रहा है। इस पर भी जीव माया के वशीभूत हुआ, अपने आप को कर्ता मानकर व्यर्थ में जन्म मरण के चक्कर में फँस कर दुःख भोग रहा है।

संसार का कोई भी मनुष्य माया से भ्रमित हुआ अपनी स्थिति से संतुष्ट नहीं है। वह अपनी बुद्धि की चतुराई से बहुत कुछ प्राप्त करने की चेष्टा निरन्तर करता रहता है। परन्तु जीव, जीवन भर की चेष्टाओं के बाद भी सन्तुष्ट नहीं हो पाता है, और उसका मन अन्त समय में भी सांसारिक लोकों की तरफ आकर्षित रहता है। इस प्रकार जीव निरन्तर जन्म मरण के चक्कर में फँस कर भारी कष्टों में फँसा हुआ है।

इस युग में माया इतनी प्रबल हो चली है कि संसार में पूर्ण अन्धकार छाया हुआ है। जब तक जीव में सात्विक चेतना न आ जाय, उसका कर्ता भाव खत्म ही नहीं हो सकता। जब तक प्राणी इस झूठे अहम्, कर्तापन के भाव से मुक्त नहीं हो जाता, उसको निष्कामकर्म योग की बात समझ में ही नहीं आ सकती।

ऐसी स्थिति में इस माया से छुटकारा पाना बहुत ही कठिन है। एक मात्र हिन्दू धर्म ही है, जिसके संतमत में इस माया से छुटकारा पाने का उपाय बताया गया है। सभी संतों ने एक मत से यही कहा है कि उस परम सत्ता से मिलने का रास्ता केवल संत सद्गुरु ही बता सकते हैं। इस सम्बन्ध में संत कबीर ने कहा है:-

''कबीरा धारा अगम की,
सद्गुरु दई लखाय।
उलट ताहि पढिये सदा,
स्वामी संग लगाय।।

मीरा बाई कहती है :-

''गुरु गोविन्द दोनों खड़े,
किसके लागूं पांव।
बलिहारी गुरु देव की,
गोविन्द दिया मिलाय।।''

इस सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द जी ने भी कहा है कि ''आध्यात्मिक जगत् में गुरु के बिना सफलता असम्भव है, परन्तु इस युग में सच्चा संत सद्गुरु मिलना कठिन है।''

07.04.1988

❖❖❖

प्रार्थना

हे स्वामी, हे प्रभो, एक असीम आनंद मेरे हृदय को भरता है, मेरे सिर में से होकर हर्ष के गीत अद्‌भुत लहरों में उमड़ रहे है और तेरी निश्चित विजय के पूर्ण विश्वास में मैं परम शांति और अजेय शक्ति पाती हूँ। तू मेरी सत्ता को भरता है, तू उसमें जीवन का संचार करता है, तू उसके छिपे हुये स्रोतों को गति देता है, तू उसकी समझ को प्रदीप्त करता है, तू उसके जीवन को तीव्र करता है।

उसके प्रेम को दस गुणा बढ़ाता है और मुझे इस बात का पता नहीं रहता कि यह विश्व 'मैं हूँ या 'मैं विश्व हूँ, कि तू मेरे अंदर है या मैं तेरे अंदर। केवल तू ही है और सब कुछ तू है, और तेरी असीम कृपा की सरितायें जगत् को भरती और परिप्लावित कर देती है।

हे प्रभो, तेरी ही इच्छा पूर्ण हो। तेरी ही जय हो ! जो तू चाहता है वही हो।

– श्रीमां

मंत्र का रहस्य

मंत्र का रहस्य तभी समझ में आ सकता है, जब गुरु, शिष्य के सद्‌गुणों से संतुष्ट हो जाते हैं। जब 'गुरु' हृदय से प्रसन्न होते हैं, तभी मंत्र का रहस्य खोलते हैं और 'मंत्र' मुक्ति देता है। ''गुरु संतोष मात्रेण अन्यथा नहीं।''

–सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
उद्देश्य

- समस्त विश्व के मानवों के कल्याण हेतु बिना किसी वर्ग, वर्ण, जाति, धर्म, राष्ट्रीयता एवं लिंग भेद के इस दिव्य अध्यात्म ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार करना एवं समस्त विश्व में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र स्थापित करना।
- विश्व के समस्त धर्मों के विकारों एवं आडम्बरों से मानव मात्र को मुक्त करना एवं अध्यात्म के मूलभूत सार्वभौम सिद्धांत के अनुसार मन मंदिर में उस परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।
- विश्व भर में वैदिक दर्शन की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार करवाकर भौतिक जगत् में विज्ञान की तरह उसे सत्य प्रमाणित करना।
- विश्व कल्याण हेतु संपूर्ण विश्व में वैदिक मनोविज्ञान (अध्यात्म विज्ञान) की शिक्षा हेतु प्रबन्ध करना तथा वहीं के लोगों को इस ज्ञान का प्रशिक्षण देने योग्य बनाना।
- विश्व के सकारात्मक स्त्री-पुरुषों को शक्तिपात-दीक्षा देकर चेतन करना तथा उन्हें अपने ही देश में इस ज्ञान के प्रचार-प्रसार का अधिकार देकर मानव शान्ति का पथ प्रशस्त करना।
- सिद्धयोग में वर्णित शक्तिपात दीक्षा द्वारा मानवीय गुणों में परिवर्तन लाया जाकर तमोगुण से रजोगुण, रजोगुण से सतोगुण, सतोगुण से त्रिगुणातीत जाति में बदलकर, उस परम तत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।

www.the-comforter.org

आकाश और पृथ्वी का मिलन-योग

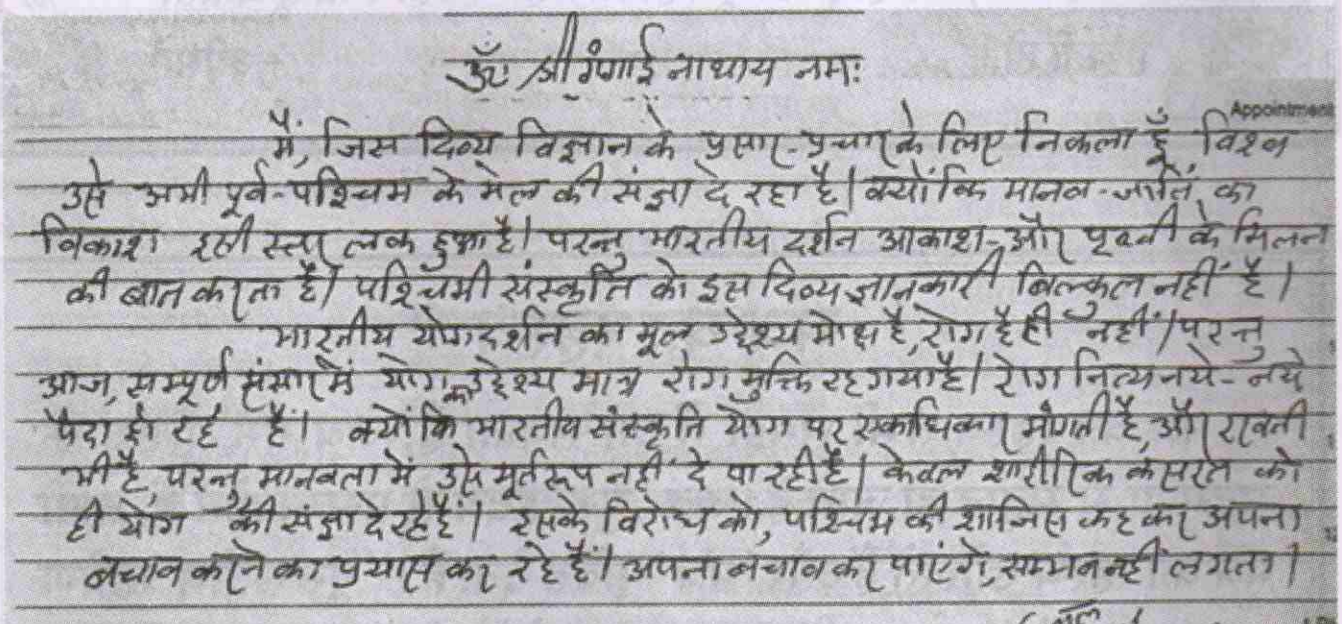

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

मैं, जिस दिव्य विज्ञान के प्रसार-प्रचार के लिए निकला हूँ विश्व उसे अभी पूर्व-पश्चिम के मेल की संज्ञा दे रहा है। क्योंकि मानव-जाति का विकास इसी स्तर तक हुआ है। परन्तु भारतीय दर्शन आकाश और पृथ्वी के मिलन की बात करता है। पश्चिमी संस्कृति को इस दिव्य ज्ञान की जानकारी बिल्कुल नहीं है।

भारतीय योगदर्शन का मूल उद्देश्य मोक्ष है, रोग है ही नहीं। परन्तु आज, सम्पूर्ण संसार में योग का उद्देश्य मात्र रोग मुक्ति रह गया है। रोग नित्य नये-नये पैदा हो रहे हैं। क्योंकि भारतीय संस्कृति योग पर एकाधिकार मानती है, और रखती भी है, परन्तु मानवता में उसे मूर्तरूप नहीं दे पा रही है। केवल शारीरिक कसरत को ही योग की संज्ञा दे रहे हैं। इसके विरोध को, पश्चिम की शाजिश कह कर अपना बचाव करने का प्रयास कर रहे हैं। अपना बचाव कर पाएंगे, सम्भव नहीं लगता।

रामलाल
14-1-2006
AVSK, जोधपुर

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः
--x--x--x--

The Supramental Menifestation Upon Earth
(पृथ्वी पर अतिमानस की अभिव्यक्ति)

A discovery or and extension of these little known or yet undeveloped powers is now envisaged by some **well-known thinkers** as a next step to be taken by mankind in its immediate evolution; the kind of creation spoken of has not been included among these developments, but it could well be considered as one of the new possibilities.

Even physical science is trying to find physical means for passing beyond the ordinary instrumentation or **procedure of Nature** in this matter of propagation or the renewal of the physical life-force in human or animal beings; but the resort to occult means and the intervention of subtle physical processes, if it could be made possible, would be a greater way which could avoid the limitations, degradations, incompleteness and heavy imperfection of the means and results solely available to the law of material force. in India there has been always from the earliest times a widely spread belief in the possibility and reality of the use of these powers by men with an advanced knowledge of these secret things or with a developed spiritual knowledge and experience and dynamic force and even, in the **Tantras**, an organized system of their method and practice.

The **intervention** of the **Yogi** in bringing about a desired birth of offspring is also generally believed in and often appealed to and the bestowal on the child so obtained of a spiritual attainment or destiny by his will or his blessing is sometimes asked for and such a result is recorded not only in the tradition of the past but maintained by the witness of the present.

But there is here still the necessity of a resort to the normal means of propagation and the gross method of physical Nature.

A purely occult method, a resort to supraphysical processes acting by **supraphysical** means for a physical result would have to be possible if we are to avoid this necessity: the resort to the sex impulse and its animal process could not be transcended otherwise. If there is some reality in the phenomenon of **materialisation** and dematerilisation claimed to be possible by occultists and evidenced by occurrences many of us have witnessed, a method of this kind would not be out of the range of possibility.

For in the theory of the occultists and in the gradation of the ranges and planes of our being which Yoga-knowledge outlines for us there is not only a subtle physical force but a subtle physical Matter intervening between life and gross Matter and to create in this subtle physical substance and precipitate the forms thus made into our grosser materiality is feasible.

It should be possible and it is believed to be possible for an object formed in this subtle physical substance to make a transit from its lubtlety into the state of gross Matter directly by the intervention of an occult force and process whether with or even without the assistance or intervention of some gross **material procedure.**

The End.

❖❖❖

गतांक से आगे... "हृदय मंथन"

आज की चर्चा का विषय राजनीति था। दो तीन सज्जन भी आज साथ हो लिए थे। उनमें से एक ने बात आरंभ की, "महाराज जी, आप भी कभी राजनीति में रहे हैं, पहले के नेता तथा आज के नेताओं में कितना अन्तर है !"

महाराजश्री ने कहा, "एक नेताजी से दो बार मेरी भेंट हुई। उनकी सादगी अनुकरणीय थी। इतना बड़ा नेता और कोई अकड़ नहीं। वह युग ऐसे ही नेताओं का था जिनमें सादगी तथा देशप्रेम कूट-कूट कर भरा था। लाला लाजपतराय, तिलक जी, गोखले जी, बस एक से बढ़कर एक।

ईश्वर से डरने वाले, धर्म पर चलने वाले, कोई छल कपट नहीं। पर उन सादगी पसंद तथा निस्वार्थ नेताओं से निचले स्तर पर वही स्वार्थ, टाँग खिंचाई, छीना झपटी तथा उखाड़-पछाड़ चलती थी। मेरा संबंध निचले स्तर पर अधिक था। मैं प्रादेशिक स्तर का कार्यकर्ता था, फिर अध्यात्म में भी कुछ रुचि रखता था।

आध्यात्मिक तथा आधुनिक राजनीति में मेल वैसे भी असंभव है। मैं इतना उकता गया था कि मैंने राजनीति से हाथ जोड़ लिए। मैंने भले ही राजनीति से नाता तोड़ लिया पर राजनीति ने मुझे नहीं छोड़ा। लोग बार-बार आकर तंग करते थे। मैंने गुरुजी से बात की तो उन्होंने मुझे दूर चले जाने को कहा। मैं देवास आ गया।"

एक सज्जन ने कहा, "राजनीति इतनी बिगड़ गई है कि बड़े-बड़े ईमानदारों को भी स्वार्थी बना देती हैं। जो भी इस अखाड़े में उतरता है, इसी के रंग में रँगा जाता है।" महाराजश्री बोले, "अरे भाई, राजनीति को ही क्यों दोष देते हो, आज कौन सा ऐसा क्षेत्र बचा है जिसमें स्वार्थ नहीं हो ! व्यापार, उद्योग, कला, साहित्य, शिक्षण सभी जगह तो स्वार्थ घुसा है। हर परिवार, संस्था तथा कार्यालय में स्वार्थ का बोलबाला है। स्वार्थ है तो दाव-पेंच भी चलते ही हैं। सब ओर यही देखने को मिलता है। यह कहो कि मनुष्य में स्वार्थ आ गया है। इसलिए उसने सभी ओर बिगाड़ कर रख दिया है।"

दूसरे सज्जन बोले, "उस समय राम-राज्य का लक्ष्य देश के सामने रखा था, उसका भी क्या हुआ, महाराजश्री ने कहा, "उनका उद्देश्य तो एकदम अच्छा था, पर देश उसको समझ नहीं पाया। कुछ लोगों ने इसे साम्प्रदायिक रूप दे दिया क्योंकि इस में राम का नाम आता था। वे समझ नहीं पाए कि परमात्मा के अनेक नामों में से राम भी एक नाम है।

राम राज्य के भाव को नहीं लेकर, शब्दों के फेरे में पड़ गए। लोगों में राम राज्य का यह अर्थ लगाया कि सब लोगों के पास खाने को अच्छा भोजन तथा रहने के लिए सुन्दर सुविधाजनक घर होगा, बैंक में पैसा, टी.वी., फर्नीचर, फ्रिज होगा, काम किसी को करना नहीं पड़ेगा, जीवन भौतिक सुखों से भरपूर होगा। किन्तु उस समय का राम राज्य बाहर देश में नहीं, मन के अन्दर था। जैसा मन होता है वैसा ही बाहर जगत् प्रकट होता है। वह प्रत्येक भारतवासी का चित्त परिवर्तित करना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने गीता के दूसरे अध्याय के अन्तिम 18 श्लोक नित्य प्रार्थना में सम्मिलित किए थे। संभवतः नेताजी यह भूल गए कि इससे पूर्व भी अनेक महापुरुष इस प्रकार के प्रयोग करके असफल रह चुके हैं। किसी एकाध व्यक्ति का चित्त बदला जा सकता है परन्तु पूरे मानव-समाज को सुधार पाना असम्भव है। नेताजी की बात यदि लोगों की समझ में नहीं आई तो इसमें लोगों का दोष भी नहीं क्योंकि उनकी चित्तस्थिति ही ऐसी है।

"वैसे देखा जाए तो आज संसार के हर कोने में अशान्ति है। स्वार्थ, अभिमान तथा ईर्ष्या, द्वेष भरा है। जैसा कि मैंने कहा कि हर क्षेत्र में स्वार्थ है, किन्तु राजनीतिकों का स्वार्थ शीघ्र ही दृष्टि में आ जाता है। राजनीतिकों को स्वार्थी कहने वाले अपने अन्दर झाँक कर देखें तो उससे भी कहीं अधिक स्वार्थ दिखेगा। हर पार्टी के कार्यकर्ताओं की आपूर्ति तो एक यही समाज करता है। जैसा समाज होगा वैसी ही पार्टियाँ होंगी तथा वैसी ही सरकार बनेगी। राजनेताओं में जो स्वार्थपरता दिखाई देती है वह समाज की ही देन है।"

एक सज्जन ने कहा, "सभी अधिकारों की बात करते हैं, कर्त्तव्य की बात कोई नहीं करता।" महाराजश्री बोले, "यह स्वार्थ का वीभत्स स्वरूप है। **कर्त्तव्य पालन से ही अधिकार स्थापित होता है।** कर्त्तव्य नहीं तो अधिकार काहे का ? किन्तु यदि पार्टियाँ, मत कबाड़ने के लिए अधिकारों की दुहाई देती हैं, कर्त्तव्य की बात नहीं करतीं। जिस देश की जनता देश, समाज तथा धर्म के प्रति कर्त्तव्य पालन में लापरवाह रहती है, वहाँ की सरकार, राजनीतिक दल तथा व्यवस्था कैसे सुधर सकती है ?"

संदर्भ-स्वामी शिवोमतीर्थ
'हृदय मंथन-1

क्रमशः अगले अंक में...

योगियों की आत्मकथा

–परमहंस श्री योगानंद

''श्रीमान् गुप्तचरजी ! यह तो बताइये कि आपको कैसे पता चला कि मैं दो साथियों के साथ भागा हूँ?'' मैंने अपनी उबलती जिज्ञासा शांत करने के लिये घर जाते हुए रास्ते में अनन्तदा से पूछा। वे शरारत भरे ढंग से मुस्कराये।

''तुम्हारे स्कूल में मुझे पता चला कि अमर अपनी कक्षा से बाहर चला गया था और लौटकर नहीं आया था। मैं अगले दिन सुबह उसके घर गया और वहाँ एक निशान लगाया हुआ एक टाईम-टेबल खोज निकाला। अमर के पिता उसी समय घोड़ा गाड़ी से बाहर जा रहे थे और कोचवान से बातें कर रहे थे।

''आज मेरा बेटा स्कूल जाने के लिये मेरे साथ गाड़ी में नहीं आयेगा। वह गायब हो गया है !'' पिता ने दुःखभरे स्वर में कहा।

''मैंने एक साथी कोचवान से सुना है कि आपका बेटा और दो अन्य लड़के यूरोपियन पोशाक पहने हावड़ा स्टेशन में एक गाड़ी में चढ़कर कहीं चले गये हैं।' कोचवान ने कहा, 'अपने चमड़े के जूते उन्होंने उस कोचवान को दे दिये।'

''इस प्रकार मुझे तीन सूत्र मिल गये – टाईम-टेबल, तीन लड़कों की मण्डली और अंग्रेजी वेश।''

अनन्तदा के रहस्योद्घाटनों को मैं हँसी और खीझ के मिलेजुले भावों के साथ सुन रहा था। कोचवान के प्रति हमारी उदारता कुछ अपात्र दान ही ठहरी।

''यह तो स्वाभाविक ही था कि मैंने अमर द्वारा टाईम-टेबल में निशान लगाये गये शहरों के रेलवे-अधिकारियों को तत्काल तार भेज दिये। उसने बरेली पर भी निशान लगाया था, इसलिये मैंने वहाँ तुम्हारे दोस्त द्वारका को तार भेज दिया था। कोलकाता में अपने पड़ोस में पूछताछ करने पर मुझे पता चला कि हमारे चचेरे भाई जतिनदा एक रात के लिये गायब रहे पर दूसरे दिन सुबह ही अंग्रेजी वेश में वापस आ गये थे। मैंने उन्हें खोजा और भोजन परनिमन्त्रित किया। उन्होंने मेरे मैत्रीपूर्ण व्यवहार से निःशंक होकर निमन्त्रण स्वीकार किया। रास्ते में सन्देह-रहित ढंग से मैं उन्हें एक पुलिस स्टेशन में ले गया। वहाँ उन्हें अनेक पुलिस अधिकारियों ने घेर लिया जिन्हें मैंने उनकी डरावनी सूरत के कारण पहले से ही चुन रखा था। उनकी भयावह दृष्टि के आगे जतीनदा अपने रहस्यात्मक व्यवहार का स्पष्टीकरण देने के लिये तैयार हो गये।

'' 'आध्यात्मिक भावनामय उत्साह में, मैं हिमालय की ओर चल पड़ा', उन्होंने कहा। 'सिद्ध महात्माओं के दर्शनों के विचार ने मेरे अंतः करण को प्रेरणा से भर दिया था। परन्तु जैसे ही मुकुन्द ने कहा, ''हिमालय की गुफाओं में जब हम समाधि में बैठ जायेंगे, तब बाघ भी वशीभूत होकर हमारे इर्दगिर्द पातलू बिल्लियों की भाँति बैठेंगे,'' तो मेरा सारा जोश ठंडा हो गया और ललाट पर पसीने की बूँदें झलकने लगी। मैंने सोचा : ''तब क्या होगा ? यदि हमारे योगबल से हिंस्र बाघों का स्वभाव नहीं बदल सका तो क्या वे हमारे साथ घरेलु बिल्लियों का-सा आचरण करेंगे ?'' अपने मनश्चक्षु में मैंने पहले से ही स्वयं को किसी बाघ के पेट में बलात् अंतर्वासी के रूप में देखा; वहाँ सम्पूर्ण शरीर के साथ एक ही बार में प्रवेश करके नहीं बल्कि शरीर के विभिन्न हिस्सों की अनेक किस्तों में !''

जतिनदा के अदृश्य हो जाने के कारण जो मेरा क्रोध था, वह हँसी में बदल गया। उन्होंने मुझे जो संताप दिया था उसका सारा मूल्य रेलगाड़ी में मिले लोटपोट करने वाले स्पष्टीकरण से चुकता हो गया। मुझे स्वीकार करना पड़ेगा कि मुझे इस बात से कुछ सन्तोष अवश्य हुआ कि जतिनदा भी पुलिस की खातिरदारी से नहीं बचे थे !

''अनंतदा ! आप जन्मजात गुप्तचर हैं।'' मेरी विनोदपूर्ण दृष्टि पूर्णतः क्रोधरहित नहीं थी। ''और मैं जतिनदा से कहुँगा कि मुझे खुशी है कि वे विश्वासघात के किसी उद्देश्य से नहीं, जैसा कि प्रतीत होता था, बल्कि केवल आत्मरक्षा की सतर्क सहजप्रवृत्ति से प्रेरित हुए थे।''

कोलकाता में घर पहुँचने पर पिताजी ने अत्यंत मर्मस्पर्शी ढंग से मुझसे अनुरोध किया कि कम से कम उच्च विद्यालय की पढ़ाई पूरी कर लेने तक मैं अपने घूमते पाँवों पर अंकुश लगाऊँ। मेरी अनुपस्थिति में उन्होंने एक सन्तवत् महात्मा पंडित स्वामी केवलानंदजी के नियमित हमारे घर आने की व्यवस्था की एक प्रेमपूर्वक योजना बनायी थी।

''ये ऋषितुल्य महात्मा तुम्हारे संस्कृत शिक्षक होंगे,'' पिताजी ने विश्वस्त ढंग से घोषणा की।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

"योग के आधार"

स्थिरता, शांति व समता

-श्री अरविन्द

तुम्हें जो कुछ अनुभूति हुई, उससे यह पता चलता है कि किन-किन शर्तों के पूरा होने पर वह स्थिति आती है, जिसमें भागवत शक्ति अहंकार का स्थान ग्रहण करती है और मन, प्राण और शरीर को अपना यंत्र बनाकर सारे कर्मों का संचालन करती हैं। मन में ग्रहण-समर्थ नीरवता का होना, मानसिक अहंकार का विलुप्त हो जाना तथा मानस-सत्ता का एकमात्र साक्षी की अवस्था में आ जाना, भागवत शक्ति के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करना तथा अपनी सत्ता को अन्य प्रभावों से अलग रखकर एकमात्र उसी भागवत प्रभाव के प्रति उन्मुक्त करना-ये ही भगवान् द्वारा और एकमात्र भगवान् द्वारा परिचालित भागवत यंत्र बनने की शर्तें हैं।

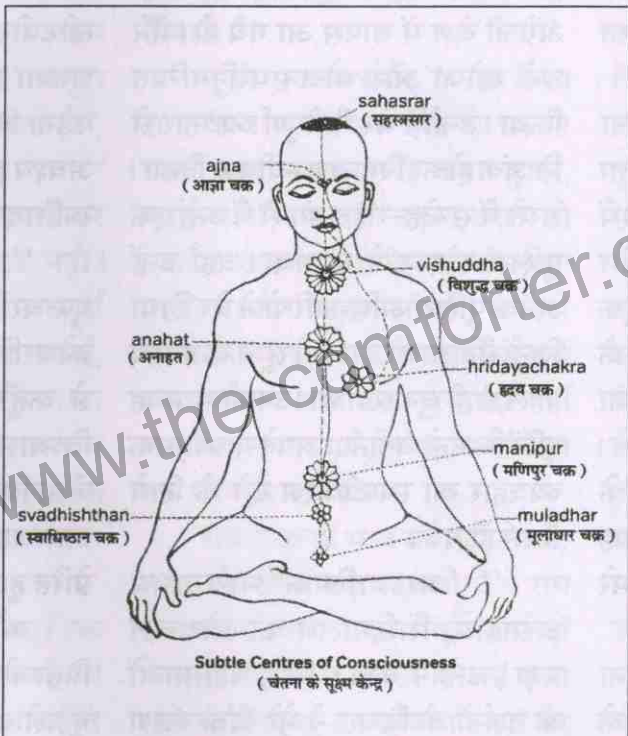

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

मन की निश्चल नीरवता स्वयं अपने आप अतिमानस चेतना को नहीं ले आती; मानव मन और अतिमानस के बीच चेतना की बहुत-सी अवस्थाएँ, अनेक लोक या स्तर हैं। निश्चल-नीरवता मन और सत्ता के अन्यान्य सभी अंगों को महत्तर वस्तुओं की ओर खोल देती है; उनमें से किसी भी अनुभूति को प्राप्त करने के लिये मन की नीरवता सबसे अधिक अनुकूल अवस्था है। इस योग में भी यही सबसे अधिक अनुकूल अवस्था है (अवश्य ही एकमात्र अनुकूल अवस्था नहीं है), जिसमें भागवत शक्ति पहले व्यक्तिगत चेतना के ऊपर और फिर उस चेतना के अंदर अवतरित होती है और वहाँ उस चेतना को रूपांतरित करने का अपना कार्य करती है, उसे आवश्यक, अनुभूतियाँ प्रदान करती है, उसके सभी दृष्टिकोणों और गतियों को परिवर्तित करती है, उसे धीरे-धीरे एक स्तर से दूसरे स्तर में परिचालित करती हुई अंतिम (अतिमानसिक) रूपांतर के लिये तैयार करती है।

'ठोस पत्थर' की तरह अपने-आपको बोध करने का यह अनुभव इस बात को सूचित करता है कि तुम्हारी बाह्य सत्ता में-परंतु मुख्यत: प्राणमय भौतिक सत्ता में-एक प्रकार की ठोस सामर्थ्य और शांति का अवतरण हुआ है। सर्वदा यही वह चीज होती है जो आधार का, पक्की नींव का काम करती है और इसीमें अन्य सब चीजे (आनंद, ज्योति, ज्ञान, भक्ति) भविष्य में अवतरित हो सकती हैं और इसी के ऊपर निरापद रूप में स्थित हो सकती या क्रिया कर सकती हैं। दूसरी अनुभूति में सुन्न पड़ जाने की जो बात तुमने लिखी है, उसका कारण यह है कि वहाँ पर गति अंदर की ओर थी; परंतु यहाँ पर योगशक्ति बाहर की ओर, पूर्ण जाग्रत् बाह्य प्रकृति के अंदर आ रही है जिसमें कि वह वहाँ योग को तथा योग के अनुभव को स्थापित करना आरंभ करे। अतएव यहाँ पर वह सुन्न पड़ने की बात नहीं है जो कि सत्ता के बाहरी अंगों से चेतना के पीछे हट आने का चिह्न है।

क्रमश: अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे....

! ! मेरे गुरुदेव ! !

-स्वामी विवेकानन्द

भारत में प्रत्येक मनुष्य के घर में या तो एक छोटा सा पूजा-स्थान होता है अथवा कहीं एक ओर एक स्वतन्त्र कमरा होता है, जहाँ वह व्यक्ति सायं-प्रातः जाता है और एक कोने में बैठकर अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए ध्यान-पूजा करता है। यह पूजा पूर्ण रूप से मानसिक ही होती है, क्योंकि दूसरा मनुष्य इसके बारे में न सुन सकता है और न जान ही सकता है।

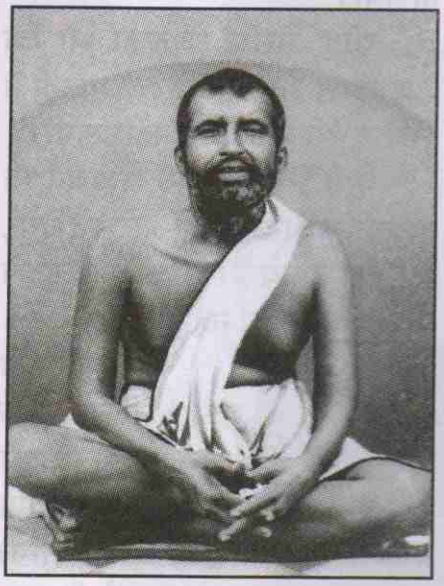

किसी मन्दिर में पुरोहिती करना एक ब्राह्मण के लिए बड़ा निन्दनीय कर्म समझा जाता है। हमारे मन्दिर, तुम्हारे गिरजाघरों के समान नहीं होते। वे सामाजिक उपासना के स्थान नहीं है, क्योंकि यदि सच पूछा जाय तो भारत में सामाजिक उपासना जैसी कोई चीज नहीं है।

मन्दिर बहुधा धनी लोगों द्वारा ही एक धार्मिक सत्कृत्य की दृष्टि से बनवाये जाते हैं। यदि किसी मनुष्य के पास बहुत धन होता है तो वह एक मन्दिर बनवाने की इच्छा करता है। उस मन्दिर में वह ईश्वर का कोई प्रतीक अथवा ईश्वरावतार की मूर्ति स्थापित करता है और ईश्वर के नाम पर पूजा करने के लिए उसे अर्पित कर देता है। यह पूजा बहुत कुछ रोमन कैथोलिक गिरजाघरों की 'मास' नामक पूजा के समान होती है, जहाँ पवित्र ग्रन्थों से कुछ वाक्य पढ़े जाते हैं तथा मूर्ति के सामने आरती की जाती है, और मूर्ति का उसी प्रकार समादर होता है, जैसे किसी महान् पुरुष का। मन्दिरों में केवल इतना ही होता है। यह आवश्यक नहीं है कि मन्दिर में जानेवाला कोई पुरुष की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ समझा जाय। वास्तव में बात तो यह है कि पहले की अपेक्षा दूसरा व्यक्ति ही अधिक धार्मिक समझा जाता है, क्योंकि भारत में धर्म प्रत्येक मनुष्य का व्यक्तिगत कार्य है।

भारत में प्रत्येक मनुष्य के घर में या तो एक छोटा सा पूजा-स्थान होता है अथवा कहीं एक ओर एक स्वतन्त्र कमरा होता है, जहाँ वह व्यक्ति सायं-प्रातः जाता है और एक कोने में बैठकर अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए ध्यान-पूजा करता है। यह पूजा पूर्ण रूप से मानसिक ही होती है, क्योंकि दूसरा मनुष्य इसके बारे में न सुन सकता है और न जान ही सकता है।

वह केवल उस पुरुष को वहाँ बैठा हुआ ही देखता है और शायद एक विशेष रूप से अपनी अँगुलियाँ चलाते हुए तथा अपने नथुने बन्द करके एक विशेष प्रकार से साँस लेते देखता है। इसके अतिरिक्त वह नहीं जानता है कि वह मनुष्य क्या कर रहा है, यहाँ तक कि शायद उस पुरुष की स्त्री भी कुछ नहीं जान सकती। इस प्रकार सारा ध्यान-पूजन उसके घर में ही एकान्त में होता है। जो मनुष्य अपना देवघर नहीं बना सकते हैं, वे किसी नदी या झील के किनारे अथवा यदि समुद्र के समीप रहते हैं तो समुद्र के किनारे ही ध्यान-पूजन करने के लिए चले जाते हैं। कुछ लोग कभी कभी किसी मन्दिर में भी प्रणाम, पूजा आदि करने के लिए जाते हैं।

हमारे देश में बहुत प्राचीन समय से मनु के कथनानुसार किसी मन्दिर में पुरोहिती करना एक हीन व्यवसाय समझा जाता है। कुछ ग्रंथों का यह भी मत है कि यह कार्य इतना नीचे दर्जे का होता है कि इसके कारण एक ब्राह्मण निन्दनीय भी हो जाता है।

जैसे शिक्षा के सम्बन्ध में पैसा लेना दोषास्पद माना जाता है, उसी प्रकार उससे कहीं अधिक प्रमाण में धार्मिक सम्बन्ध में पैसा लेना दूषित है, क्योंकि मन्दिर के पुरोहित जब पैसा लेकर कार्य करते हैं, तब वे इस पवित्र कार्य को बाजारी वस्तुओं के क्रय-विक्रय का रूप देते हैं।

संदर्भ-विवेकानंद वॉल्यूम-7

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

"सद्गुरु आज्ञा"

मान सहित विष खाय के, शम्भु भये जगदीश। बिना मान अमृत पिये, राहु (राक्षस) कटायो शीश।।

एक कथा के अनुसार समुद्र मंथन में कुछ तत्त्वों की प्राप्ति हुई थी। उसमें हलाहल जहर और अमृत भी था। अमृत पीने का सौभाग्य देवताओं को प्राप्त हुआ था। जब राक्षसों को पता लगा कि अमृत पीकर देवता अमर हो जाएंगे तो उन्होंने छल-कपट से एक राक्षस को देवताओं की पंक्ति में खड़ा कर दिया।

जब अमृत बाँटना शुरू किया तो उसमें राहु नाम के राक्षस को भी अमृत दिया लेकिन इतने तीव्र वेग से भगवान् विष्णु को मालुम हुआ और अमृत उसके गले के नीचे उतरा ही नहीं था, उससे पहले ही उसका गला काट दिया गया। इस प्रकार वो राक्षस अमर होने से वंचित रह गया।

दूसरी तरफ जगत् कल्याण के लिए सबकी प्रार्थना पर भगवान् शिव ने हलाहल जहर पी लिया फिर भी नुकशान नहीं हुआ और जगदीश अर्थात् विश्व के लिए पूजनीय हो गए।

महाबलि रावण ने भगवान् शिव की आराधना कर बहुत सी शक्तियाँ हासिल कर ली। लेकिन अनीति पर उतरते ही उसका भी नाश हो गया और पूरे वंश का नाश करा दिया।

ईश्वर के कार्य में छल-कपट या अपने मन की होशियारी की कहीं कोई जगह नहीं है।

भस्मासुर राक्षस ने घोर तपस्या कर भगवान् शिव को प्रसन्न कर दिया। जब भगवान् शिव ने वर माँगने को कहा तो उसने कहा कि हे महादेव ! मुझे ऐसा वर दीजिए कि मैं जिस पर भी हाथ रखूँ,

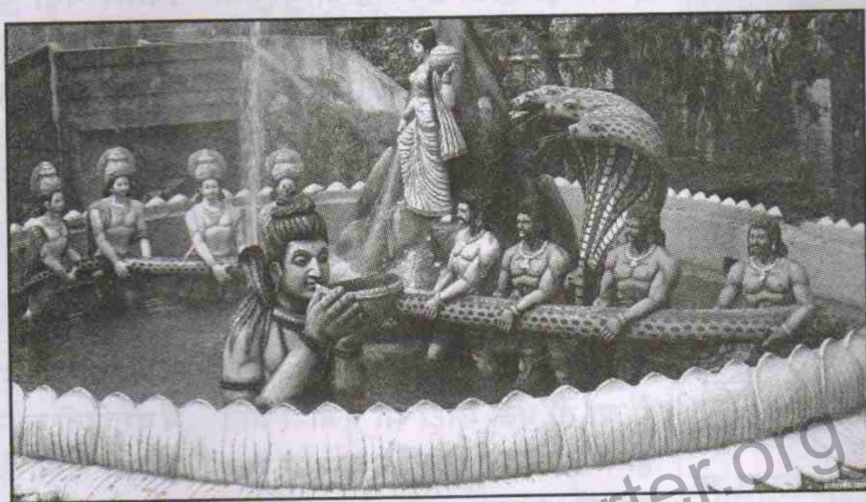

वो भस्म हो जाए।

भगवान् शिव ने तथास्तु कह दिया। राक्षस को विश्वास नहीं हुआ कि वर की सिद्धि हुई या नहीं ! उसने परीक्षण के लिए भगवान् शिव पर ही हाथ रखने का प्रयास किया।

इस पर भगवान् शिव उसके वहाँ से दूर भाग गये। फिर भगवान् विष्णु ने उसके सामने मोहिनी रूप धारण कर, उसको माया रूप में भ्रमित कर, उसको अपने ही ऊपर अपना हाथ रखने के लिए मजबूर कर दिया। ज्योंहि उसने अपना हाथ अपनी छाती पर रखकर कसम खाई त्योंहि वह जल कर भस्म हो गया।

यीशु मसीह ने कहा था कि "आकाश और पृथ्वी टल सकती है लेकिन मेरी बातें कभी नहीं टलेगी।"

उसी प्रकार सद्गुरु के वचन भी अटल होते हैं। उन्होंने जो आदेश दे दिया, वह ब्रह्म वाक्य है। उसको कोई बदल नहीं सकता।

यदि सद्गुरु ने कह दिया कि लकड़ी-लकड़ी जपने से मोक्ष होगा और दूसरा ज्ञानी आकर कहे कि राम राम जपने से होगा तो एक सच्चे शिष्य के लिए अपने सद्गुरु का वचन ही सर्वोपरि है, वह लकड़ी-लकड़ी का ही जाप करेगा। उसी में उसका कल्याण है।

सामर्थ्य और शक्ति सद्गुरु आज्ञा में है, न कि शब्दों में।

एक शिष्य का परम विकास तभी संभव है, जब वह पूर्ण रूप से अपने सद्गुरु भगवान् पर विश्वास करे।

साधक के मन में इस मर्यादा का भय सदा बना रहे कि कहीं मैं आज्ञा का उल्लंघन तो नहीं कर रहा हूँ? उन्हें अपना आत्मावलोकन करना चाहिए।

-साधक

❖❖❖

www.the-comforter.org

जगद्गुरु का दिव्य मंत्र

'मानवगुरु मंत्र देते हैं कान में और जगद्गुरु मंत्र देते हैं प्राण में' श्रीरामकृष्ण भक्तों के प्राण में आध्यात्मिक शक्ति का संचार कर उनकी कुण्डलिनी को जगा दिया करते थे। साधक का अधिकार या योग्यता देखकर वे भावावेश में उनके वक्ष, जिह्वा, मस्तक या शरीर के किसी अन्य अंग का स्पर्श करते। इसके फलस्वरूप उनका मन संयत, अंतर्मुख हो जाता और उनके हृदय में सुप्त ईश्वरीय भाव जाग्रत हो उठता।

श्रीरामकृष्ण ने एक बार भावावस्था में कहा था कि जिस किसी ने हृदय से जप-ध्यान किया है, भगवान् को हृदय से पुकारा है, उसे यहाँ आना ही होगा। किसी दूसरे समय उन्होंने समाधि से उतरकर कहा था, ''जो मेरा नाम जपेगा उसको मैं अंतिम समय हाथ पकड़कर मुक्तिधाम ले जाऊँगा।''

-श्री रामकृष्ण परमहंस

www.the-comforter.org

कहानी...

'धुन की पक्की चिड़िया'

सच्चा और दृढ़ निश्चयी साधक उच्चत्तम शिखर तक पहुँच जाता है

**नन्हें से नन्हां जीव भी जब दृढ निश्चय कर लेता है
तो भगवान् भी किसी न किसी रूप में उसकी सहायता करते हैं।**

महर्षि अगस्त्य एक त्यागी, तपस्वी और तेजस्वी ऋषि थे। भारत के बीचों-बीच उत्तर और दक्षिण को अलग करता हुआ एक पहाड़ है- **विंध्याचल**। कहा जाता है एक बार यह पहाड़ घमण्ड से ऊपर की ओर उठने लगा।

वह ऊँचा और ऊँचा उठता गया। यहाँ तक कि **सूरज** का रास्ता भी रुकने लगा। मानो देश के दो हिस्सों के बीच एक **दीवार** खड़ी हो गई हो। महर्षि **अगस्त्य** विंध्याचल के सामने जा खड़े हुए। उसने ऋषि का बहुत **आदर-सत्कार** किया और आने का कारण पूछा।

"मुझे दक्षिण की ओर जाना है, पर तुम्हारे कारण रास्ता रुक गया है, मुझे आगे जाने का रास्ता दो।" विंध्याचल **ऋषि** के चरणों को दंडवत कर लेट गया। जाते समय ऋषि ने उससे आग्रह किया कि,"जब तक मैं वापस लौट के न आ जाऊं, तुम इसी तरह रुके रहना।"

विंध्याचल ने उन्हें वचन दिया, परन्तु ऋषि एक बार दक्षिण गए तो लौट कर वापस नहीं आए, वे वहीं पर बस गए। उस दिन से आज तक विंध्याचल उसी प्रकार से झुका हुआ है।इस प्रकार ऋषि की कृपा से देश के दो हिस्सों के बीच बनी दीवार ढ़ह गई।

महर्षि अगस्तय ने दक्षिण में रहकर दक्षिण की प्रमुख भाषा तमिल में **व्याकरण** तैयार किया। उसे एक प्रारूप दिया। ऐसा कहा जाता है कि महर्षि अगस्त्य की कृपा से दक्षिण भारत को कावेरी, जैसी महान् नदी मिली। उन्हीं दिनों दक्षिण में दो राक्षस रहा करते थे।

वे साधु वेश में ऋषियों को भोजन कराते थे और छल-कपट से ऋषियों को मार देते थे। एक दिन महर्षि अगस्त्य प्रातः के बाद समुद्र में स्नान कर लौट रहे थे तो उन्होंने देखा कि एक नन्हीं चिड़िया समुद्र में स्नान करती और चोंच में समुद्र का पानी भरती और उस पानी को रेत में उड़ेल देती जो बालु उसके शरीर में लग जाती वह समुद्र में झाड़ कर गिरा देती है। उसका यह नियम नियमित बरकरार रहा, महर्षि अगस्त्य समझ नहीं पाए कि आखिर बात क्या है ?

दूसरे दिन भी जब वे समुद्र में स्नान करने गए, तब भी उस चिड़िया का यही क्रम चलता रहा और वह पूरी लगन और मेहनत से अपने कार्य में जुटी हुई थी। "यह क्या कर रही हो ?" महर्षि अगस्त्य ने पूछा । "महर्षि , आप स्वयं देख रहे हैं, मैं बहुत व्यस्त हूँ। क्षमा करें, मुझे बात करने की भी फुरसत नहीं है।"

महर्षि अगस्त्य को बहुत आश्चर्य हुआ। आज तक उनसे किसी ने इस तरह बात नहीं की थी। फिर भी उन्हें जिज्ञासा हुई। उन्होंने कहा- "मुझे अपनी बात बताओ, शायद मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूं।

"**ऋषिवर**, मेरा अपराध क्षमा करें। समुद्र मेरे अंडे बहा ले गया है। मैंने इससे विनती की, पर इस निर्दयी को मुझ पर दया नहीं आई। इसने मेरी प्रार्थना को ठुकरा दिया, कहकर चिड़िया रोने लगी।

"पर अब तुम क्या कर रही हो ?" महर्षि ने पूछा।"मैंने दृढ़ निश्चय किया है कि मैं सारा समुद्र उड़ेल दूँगी। समुद्र को पाट दूंगी। जब तक यह नहीं कर लूँगी, चैन नहीं लूँगी। महर्षि अगस्त्य उसकी वीरता और **संकल्प** से प्रभावित हुए। उन्होंने समुद्र से अंडे लौटा देने को कहा पर घमंडी समुद्र नहीं माना।

महर्षि ने कहा, "तुम प्रार्थना के काबिल नहीं हो। तुम्हें दंड मिलना चाहिए। भगवान् राम ने तुम्हें धनुष बाण पर चढ़ाकर सोख लेने का निर्णय लिया था और तुमने **प्रार्थना** की तब तुम पर पुल बाँधा गया। आज मैं तुम्हें पूरा पी जाऊँगा।" कहकर महर्षि ने समुद्र का सारा जल **आचमन** कर लिया।

अब समुद्र उनसे प्रार्थना करने लगा।उसने चिड़िया के अंडे वापस कर दिए और महर्षि ने उन्हें क्षमा कर दिया।

नन्हें से नन्हां जीव भी जब दृढ निश्चय कर लेता है तो **भगवान्** भी किसी न किसी रूप में उसकी सहायता करते हैं।

❖❖❖

www.the-comforter.org

श्रद्धा और शक्ति

यह आत्म-श्रद्धा, अपने किसी-न-किसी रूप में, हमारी सत्ता की क्रिया के लिये अनिवार्य है और इसके बिना मनुष्य अपने जीवन में एक कदम भी नहीं चल सकता, अब तक अप्राप्त पूर्णता की ओर कोई कदम आगे बढाना तो दूर रहा।

यह इतनी केन्द्रीय और आवश्यक वस्तु है कि इसके विषय में गीता का यह कहना उचित ही है कि किसी मनुष्य की जो भी श्रद्धा होती है, वही वह होता है, **यो यच्छ्रद्धः स एव सः**, और इसके साथ यह भी कहा जा सकता है कि जिस वस्तु को अपने अन्दर सम्भव के रूप में देखने और उसके लिये प्रयत्न करने की श्रद्धा उसमें होती है उस वस्तु का वह सर्जन कर सकता है तथा वही बन सकता है।

एक प्रकार की श्रद्धा वह है जिसकी माँग 'पूर्णयोग' एक अनिवार्य वस्तु के रूप में करता है।

संदर्भ- महर्षि श्री अरविन्द,
'योग समन्वय' पुस्तक पृष्ठ-787

यो यच्छ्रद्धः स एव सः

गीता का यह कहना उचित ही है कि किसी मनुष्य की जो भी '**श्रद्धा**' होती है, वही '*वह*' होता है।

www.the-comforter.org

कुछ महत्त्वपूर्ण शब्दों के अर्थ-

सहायक-अधीन रहकर काम में सहायता करनेवाला, सहकारी,सहायता करनेवाला, कार्य की सिद्धि में योग देनेवाला।

सहायता-किसी के कार्य में इस प्रकारयोग देना कि वह काम जल्दी या ठीक तरह से हो, मदद, कोई कार्य आगे बढ़ाने या चलता रखने के लिए दिया जाने वाला धन।

सहिष्णुता-सहिष्णु होना, भाव, गुण या शक्ति, सहनशीलता या क्षमा।

साँचा-किसी बड़ी आकृति का छोटा नमूना,बेल-बूटे छापने का ठप्पा,छापा, शरीर, देह,विशिष्ट आकार का वह उपकरण जिसमें कोई गीली चीज ढालकर उसी के आकार की दूसरी और चीजें बनाई जाती हैं।

सांप्रदायिकता-केवल अपने सम्प्रदाय की श्रेष्ठता और हितों का विशेष ध्यान रखना और दूसरे सम्प्रदायों से द्वेष रखना, सांप्रदायिक होने का भाव।

सागर-एक प्रकार के दशनामी साधुओं की उपाधि या साम्प्रदायिक नाम, चार या सात की संख्या, समुद्र, सरोवर, संन्यासियों का वर्ग विशेष।

सार्वभौम-चक्रवर्ती राजा, हाथी, सारी पृथ्वी या उसके सब देशों से संबंध रखने या उनमें होनेवाला, सारी भूमि संबंधी।

सार्वभौमिक-वह जिसका दृष्टिकोण इतना विस्तृत हो कि वह संसार के सब लोगों या देशों को एक-सा समझता हो, स्थानिक, राष्ट्रीय अथवा दूसरे संकुचित विचारों से रहित।

सामीप्य-पड़ोस, मुक्ति का एक भेद,पड़ौसी, निकटता, सद्गुरु के प्रति इतनी भक्ति कि वे हर समय निकट रहे ऐसा आभास होना, प्रति पल सद्गुरु का साया रहे, ये सद्गुरुदेव की अतिप्रसन्नता पर एक स्थिति है।

सायुज्य- मुक्ति का एक भेद जिसमें जीवात्मा, परमात्मा में लीन हो जाती है,एकरूपता,ऐसा संयोग जिसमें कोई भेद न रहे, सादृश्य।

❖❖❖

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

सद्गुरुदेव की अमर तस्वीर

पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
Sadgurudev Shri Ramlal Ji Siyag

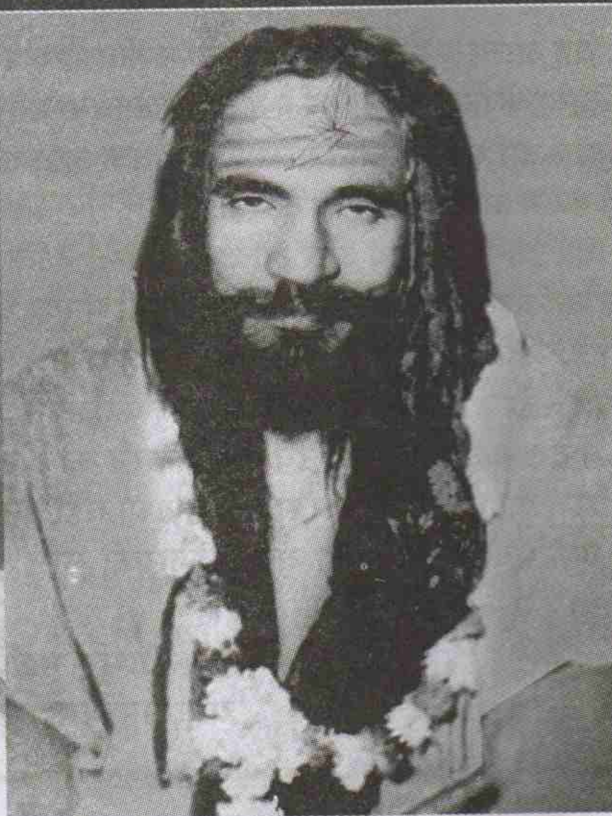

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी(ब्रह्मलीन)
Baba Shri Gangai Nath Ji(Brahmleen)

"देखो, मैं कल्कि अवतार हूँ। मेरी तस्वीर से ध्यान लगता है। मेरे जाने के बाद मेरी 'तस्वीर' तो नहीं मरेगी ! वह आपको 'जवाब' देगी।"

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

www.the-comforter.org

AVSK समदड़ी व सांचौर टीम द्वारा गुजरात के बनासकांठा, धानेरा व सांचौर क्षेत्र के विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (2-7 जनवरी 2018)

www.thecomforter.org

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
जोधपुर शाखा–कोटा
में ध्यान मग्न साधक

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के 05 जून, 2017 को ब्रह्मलीन होने के पश्चात कोटा आश्रम पर साधकों को होने वाली योगिक क्रियाएें

जोधपुर जिले के पीपाड़ सिटी कस्बे में सिद्धयोग शिविर का आयोजन। ग्रामीणों ने संजीवनी मंत्र के जप के साथ 15 मिनट किया ध्यान। (1 जनवरी 2018)

www.the-comforter.o

AVSK शिमोगा टीम द्वारा एक विद्यालय में सिद्धयोग शिविर का आयोजन। (जनवरी 2018)

CRPF 5 sig BN वार्षिक मेला हलोमाजरा, चण्डीगढ़ में सिद्धयोग दर्शन का प्रचार-प्रसार। (12 जनवरी 2018)

www.the-comforter.org

अपना घर आश्रम, कोटा में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (28 दिसम्बर 2018)

14 वर्षों की तड़प के बाद

समर्थ सद्‌गुरुदेव की प्राप्ति

सद्‌गुरुदेव के मिलन से असीम आनंद और शांति का अथाह सागर उमड़ा

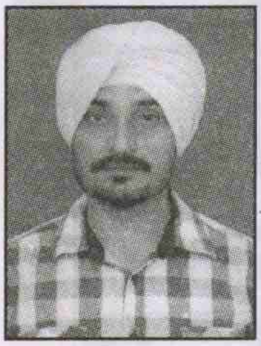

मैं प्रदीप सिंह भारतीय सेना में कार्यरत हूँ। एक समय था, जब ना तो मुझे धर्म के बारे में ज्ञान था, ना गुरु के बारे में। मुझे नहीं पता था कि हमारे जीवन का लक्ष्य क्या हैं ? मेरा जीवन_ भी एक आम इन्सानों की तरह चल रहा था, मुझमें पता नहीं कितने अवगुण थे, शायद मैं बता भी नहीं सकता।

बात ''2003'' की है, तब मेरी गुरु के प्रति आस्था जागी, जम्मू कश्मीर के तंगधार में, मैं पोस्टेड था, ड्यूटी पर मेरे साथ एक सतसंगी भाई था, वह हमेशा गुरु के बारे में बातें करता रहता था, और बातों-बातों में वह इतना भावुक हो जाता था कि उसकी आँखों में आंसु बहने लगते थे।

मुझे बहुत हैरानी होती कि गुरु के प्रति इतना प्यार क्यों ? धीरे-धीरे उसकी बातें समझ में आई, कि जीवन में गुरु की जरूरत क्यों है, समझ आ गया कि इस जीवन का लक्ष्य क्या है, और वह लक्ष्य बिना गुरु के पूरा नहीं हो सकता। मैंने गुरु की तलाश की, गुरु मिला उनसे नाम दान (दीक्षा) प्राप्त किया और भक्ति शुरू कर दी।

भक्ति करता रहा लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला, जब भी सत्संग में जाते तो वहाँ एक ही बात बताई जाती कि गुरु में कोई कमी नहीं होती, शिष्य में ही कोई कमी होगी, जो उसकी साधना सफल नहीं हो पा रही। इस वजह से मैं हमेशा खुद में ही कमियाँ ढूँढ़ता रहता और उन्हें दूर करने की कोशिश करता रहता था।

मुझमें भक्ति की तीव्र इच्छा थी कि मैं जल्दी से जल्दी भगवान् की प्राप्ति कर लेना चाहता था। रात को उठ-उठ कर, मैं ध्यान और जाप किया करता था। मैं जल्दी से जल्दी इस जीवन को सफल कर देना चाहता था।

एक बार क्या हुआ कि जप और ध्यान बहुत ज्यादा करने की वजह से, मेरा ध्यान इतना एकाग्र हो गया कि जैसे ही मैं सोने के लिए अपने बिस्तर पर जाता और जैसे ही सोने लगता तो अचानक ही मेरा पूरा शरीर प्रकाश से भर जाता, मुझे समझ नहीं आता था कि मैं प्रकाश में हूँ या प्रकाश मुझ में है। मुझे प्रकाश के अलावा कुछ भी नजर नहीं आता था।

''अनहद नाद'' भी मुझे सुनाई देने लगा, यह इतना तीव्र होता था कि मुझसे सहन करना भी मुश्किल हो जाता था और मैं डरने लगा था, ऐसी भक्ति से। (यह पूरी घटना महज मेरी एकाग्रता की वजह से घटी थी।) धीरे-धीरे यह सब बंद हो गया और जीवन फिर सामान्य तरीके से चलने लगा। मैं 14 वर्ष ध्यान और भक्ति करता रहा, लेकिन कोई किनारा नहीं मिला। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मुझमें कमी किस बात की है ? मैं हमेशा ही चिंता में रहने लगा था कि शायद यह जीवन ऐसे ही चला जाएगा। धीरे-धीरे मेरी उस गुरु

-वर्तमान में, भुज (गुजरात) में भारतीय सेना (Army) में नौकरी कर रहा हूँ।

- सर्विस के बाद संन्यास लेने की सोच रहा था।

-आज दिनांक 25-12-2017 को पहली बार सपरिवार जोधपुर आश्रम आया।

-14 वर्ष तक गुरु की तलाश में रहा।

-एक ही चिंता थी कि कहीं जीवन वृथा न चला जाय।

-जीवन डांवाडोल चलता रहा।

-पहले वाली आराधना से नफरत सी हो गई। मुझे लगा कि अब मैं भक्ति नहीं कर पाऊँगा।

-अश्विनी हॉस्पीटल मुम्बई में मई 2017 को सद्‌गुरुदेव के पावन मिलन की अमृतमयी वेला आई।

-10 मिनट के ध्यान में ही लगा कि अब सच्चे समर्थ सद्‌गुरु मिल गये।

-अब मैं कह सकता हूँ कि 'गुरु तत्त्व' क्या होता है ?

-अब जीवन मे कोई संशय नहीं।

-अब सच्चा गुरु मिल गया, सब चिन्ता खात्म। अरदास कर देते हैं, और प्रार्थना पूरी होती है।

-हमारे लिये क्या सही है और क्या गलत ? ये बातें गुरु से ज्यादा और कोई नहीं जानता।

www.the-comforter.org

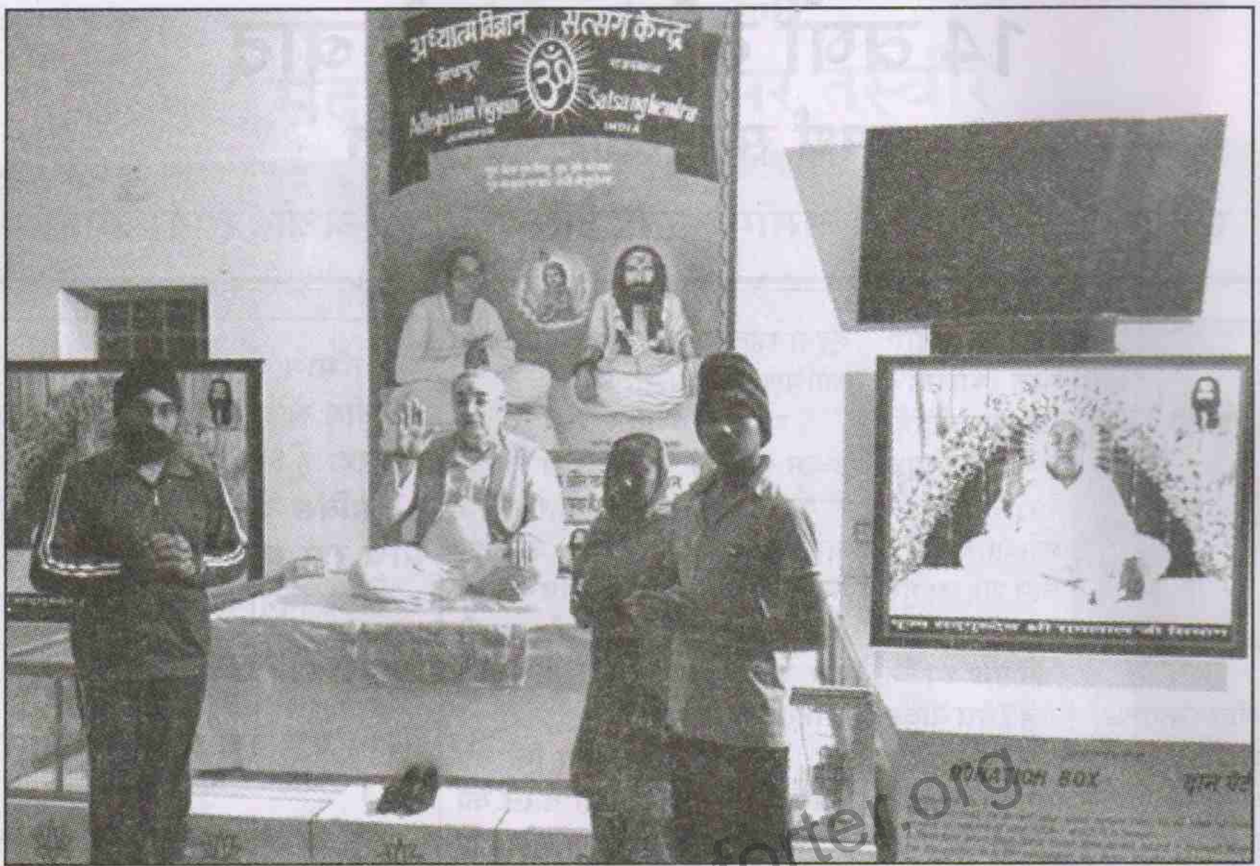

के प्रति आस्था भी कम होती गई।

(गुरुदेव सियाग से दीक्षा प्राप्ति)

बात मई 2017 की है। मैं सैना के अस्पताल, अश्विनी में अपने किसी ईलाज के लिए भर्ती था, गुरुदेव सियाग के एक शिष्य वहाँ ध्यान करने की विधि बताकर ध्यान करवाते थे। मैंने मन में सोचा कि जीवन के 14 वर्ष गुजर गये-ध्यान कर करके ऊब गया, कुछ होता तो है नहीं, अब काहे का ध्यान?

फिर भी मन में सोचा कि अभी अपने पास समय तो पड़ा ही है, ध्यान करने में कुछ बुराई तो है नहीं। मैंने भी गुरु जी का चित्र देखकर ध्यान किया। मुझे नहीं पता कब ध्यान लगा और मैं गहराई में चला गया? मेरा रोम-रोम खिल उठा। असीम शांति का एहसास हुआ। मन इतने वर्षों से तड़प रहा था, आज निर्मल और शांत हो गया। मुझे इन 10 से 15 मिनट में ज्ञान हो गया कि यही मेरे सच्चे सत्गुरु है। मेरी सभी शंकाएँ दूर हो गई। 14 वर्ष बाद एक सच्चे गुरु की प्राप्ति हो पाई, आज मेरा जीवन सफल है। मुझे किसी प्रकार की चिंता नहीं है। अपने आपको मैंने गुरु की सुपुर्द कर दिया है। सत्गुरु जी मेरी हर मनोकामना को पूरा करते हैं।

सच बात तो यह है कि पूरा गुरु हमेशा अपने शिष्य के पास और साथ होता है, शिष्य कहीं भी हो, सही समय आने पर गुरु अपने-आप उसे अपने पास बुला लेता है।

- जब पूर्ण सदगुरु मिल जाये तो कोई चिंता नहीं।

- जब कोई भक्ति करें और परिणाम न मिले तो क्या फायदा?

- जो परिणाम मिले, इसी जन्म में मिले।

- मेरी पसली में काफी दर्द था। एक दिन प्रार्थना की कि मेरा यह दर्द ठीक हो जाये और ध्यान के दौरान उसी पॉइंट पर पिंच हुआ और दर्द ठीक हो गया।

पहले कुछ नहीं होता था, लेकिन उस दिन पहली बार लगा कि कोई शक्ति है। शरीर में झटके लगे, शरीर पसीना-पसीना हो गया, अन्दर से टन-टन की आवाज आई। **सद्गुरुदेव भगवान् के पावन मिलन के बाद मेरा रोम रोम खिल गया।** इतनी तड़प के बाद जब मुझे सद्गुरुदेव की प्राप्ति हुई तो मुझे समझ में आ रहा है कि इस **"सद्गुरु तत्त्व"** का मूल्य क्या है?

"भरसक प्रयास किया तब तक कुछ नहीं मिला और जब मिलने का समय आया तो सहज में इतना दे दिया कि मैं कल्पना नहीं कर सकता।"

मेरी तो जगत् को एक ही राय है कि जिनको 'सद्गुरुदेव भगवान मिल गये हैं, अपने भीतर की गइराई में उतरते जाएं और जिनको नहीं मिले हैं वे अंगीकार करलें अपनी आत्मा में।

"सद्गुरुदेव मिलन के बाद हम अकेले नहीं।"

निर्गुण निराकार के सगुण साकार रूप सद्गुरुदेव भगवान् को बारंबार प्रणाम करता हूँ।

प्रदीप सिंह उम्र-40 वर्ष
प्रेम नगर,
बरनाला (पंजाब)-148101

Very Peacefully Mind In Spiritual India

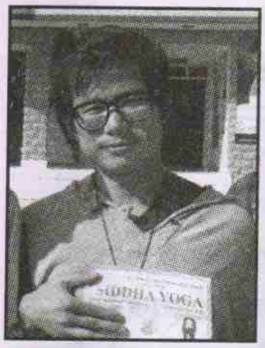

I am Alex Han from South Korea. I learnt mehtod of meditation and listened Holy Mantra. I did 15 minutes meditation with holy chant. During the meditation, I felt powerful energy in my head that I had never experienced before. My Spirit became Holy.

The people at the center were very friendly and explained all the details about this meditation process

It was Absolutely Free but it one want to donate they can.

The teaching were very easy to learn and can be practiced everyday and everywhere.

It was wonderful experience and
highly recommended
Thank you
In Jodhpur Centre
29-12-2017

Alex Han
Seoul, S. Korea

मैं दक्षिण कोरिया से एलेक्स हान हूँ। मैंने पवित्र मंत्र के साथ 15 मिनट का ध्यान सीख लिया है। ध्यान के दौरान मैंने मेरे मस्तिष्क में शक्तिशाली ऊर्जा महसूस की, जो कि मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया। मेरी आत्मा होलीएक्स बन गई अर्थात् आत्मा पवित्र हो गई।

केन्द्र के लोग बहुत ही दोस्ताना थे और इस ध्यान के बारे में भी पूरा विवरण समझाया। शिक्षण हर दिन और हर जगह अभ्यास करने के लिए बहुत आसान था। यह बिल्कुल मुफ्त था लेकिन अगर आप चाहें तो दान कर सकते हैं। यह अद्भुत अनुभव और शिक्षण था। यह कार्य अत्यधिक अनुशंसित है।

धन्यवाद।

एलेक्स हान, दक्षिण कोरिया

www.the-comforter.org

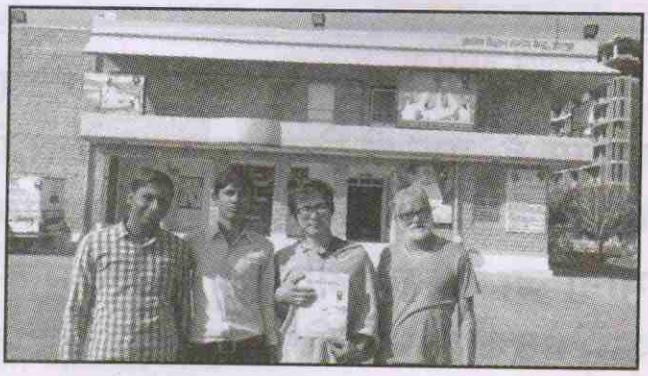

मुम्बई के अश्विनी हॉस्पीटल में आयोजित सिद्धयोग शिविरों में आए हुए साधकों के अनुभव

कुण्डलिनी जनित स्वतः यौगिक क्रियाएँ हुई

दिसम्बर 2017 की बात है। मैं अश्विनी हॉस्पीटल,मुम्बई में भर्ती था। मुझे थायराइड की बीमारी है। अश्विनी अस्पताल में प्रतिदिन गुरुदेव सियाग सिद्धयोग शिविर लगता है और संजीवनी मंत्र के साथ ध्यान कराया जाता है। एक दिन मैंने भी सिद्धयोग के कार्यक्रम में जाकर ध्यान किया तो बहुत अच्छा लगा। 2-3 दिन बाद स्वतः ही सिर की यौगिक क्रियाएँ होने लगी। क्रियाएँ इतनी तेज गति से होती हैं कि होठ,गाल आदि पूरा शरीर बहुत तेजी से हिलने लगते हैं।

ध्यान के बाद बहुत आनन्द की अनुभूति होती है। गुरुदेव की कृपा बरसनी शुरू हो चुकी है, और अब घर पर आकर मेरी पत्नी को गुरुदेव के ध्यान के बारे में बताया और ध्यान करवाया तो उसको भी स्वतः यौगिक क्रियाएँ शुरू हो गई।

जय गुरुदेव।

-सुरेन्द्र सिंह
अश्विनी अस्पताल, मुम्बई

असंभव को संभव बनाया सिद्धयोग ने

गुरुदेव को कोटि-कोटि प्रणाम। मैं गुरुदेव का बहुत बड़ा एहसानमद हूँ। मैं 5 महिने पहले अश्विनी हॉस्पीटल में सिद्धयोग के कार्यक्रम में गया था।

जो कार्यक्रम करवाने आये थे उन्होंने बताया कि गुरुदेव से प्रार्थना करने पर सारे काम बनते हैं।

मैंने भी सबसे पहले गुरुदेव को एक सवाल किया कि 'क्या मेरी समस्या का इलाज है, अगर आपने पूरा किया तो मैं ध्यान करूँगा।'

मेरी समस्या यह थी कि मेरी पत्नी पुलिस में है और ट्रेनिंग के दौरान बच्चेदानी में चोट लगने से दांयी ट्यूब खराब हो गई और फिर ऑपरेशन कर निकाल दी गई और बांयी भी खराब है इसलिए बच्चा नहीं हो सकता।

हमने बहुत इलाज करवाया लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। डॉक्टर ने टेस्ट ट्यूब बेबी की सलाह दी और हमने वो किया लेकिन अपनेपन का एहसास नहीं हुआ।

हम पति-पत्नी दोनों ही संजीवनी मंत्र का सघन जप व नियमित ध्यान कर रहे हैं।

गुरुदेव से करूण प्रार्थना की और प्रभु ने सुन भी ली। आज मेरी पत्नी 5 महीने से गर्भवती है।

जो हमारे लिए एक चमत्कार से कम नहीं। और कोई इलाज भी नहीं चल रहा है। सद्‌गुरुदेव की असीम कृपा ही है-सिद्धयोग ने असंभव को संभव बना दिया। ऐसे परम दयालु सद्‌गुरुदेव भगवान् को बारंबार प्रणाम करता हूँ।

वेकण्टेश्वर
20 मद्रास रेजिमेन्ट,
जाम नगर

"यदि यह सत्य है कि सब कुछ उस 'एक' ही परमसत्ता का विभिन्न रूपों में प्रकाश है, एक ही चेतना का उत्तरोत्तर विकास है तो मन का अतिमानस से, प्राण का चित्त से, शरीर का सत् से और आत्मा का आनन्द से पुनर्मिलन असंभव नहीं माना जा सकता और तब मानव मंदिर में सच्चिदानंद की प्राण प्रतिष्ठा कोई असंभव और अलौकिक बात नहीं रह जाती।"

-महर्षि श्री अरविन्द

www.the-comforter.org

गतांक से आगे....

हठयोग

फलतः, सिद्ध हठयोगी का शरीर सहिष्णुता और बल तथा अथक शक्ति-प्रयोग के ऐसे करतबों को कर सकता है कि जिन्हें मनुष्य की सामान्य भौतिक शक्तियाँ अपनी पराकाष्ठा को पहुँचकर भी नहीं कर सकती।

प्रत्येक बाधा, प्रत्येक त्रुटि, प्रत्येक अति एवं प्रत्येक आघात नाना प्रकार की अशुद्धता और अव्यवस्था उत्पन्न करता है। प्रकृति को जब अपने ऊपर छोड़ दिया जाता है तो वह अपने उद्देश्यों के लिये इन सबसे अपना कार्य खूब अच्छी तरह चला लेती है।

परन्तु ज्यों ही मनुष्य का भ्रान्तिशील मन और संकल्प उसकी आदतों और प्राणिक अन्धप्रवृत्तियों एवं सहज स्फुरणाओं में हस्तक्षेप करते हैं, विशेषकर जब वे झूठी या बनावटी आदतें पैदा कर देते हैं, तब एक और भी अधिक अनिश्चित व्यवस्था एवं बारंबार पैदा होनेवाली अव्यवस्था हमारी सत्ता का नियम बन जाती हैं।

तथापि यह हस्तक्षेप होना अनिवार्य है, क्योंकि, मनुष्य अपने अन्दर की प्राणिक प्रकृति के प्रयोजनों के लिये ही नहीं बल्कि उन उच्चतर प्रयोजनों के लिये भी जीवन धारण करता है जिन्हें प्रकृति अपने प्रथम सन्तुलन के समय विचार में ही नहीं लायी थी और जिनके साथ उसे कठिनतापूर्वक अपनी क्रियाओं का मेल बिठाना होता है।

अतएव, एक महत्तर स्थिति या क्रियाशीलता को प्राप्त करने के लिये सबसे पहली आवश्यक बात यह है कि इस अव्यवस्थित चंचलता से छुटकारा पाया जाये, क्रिया को शान्त करके नियन्त्रित किया जाये। **हठयोगी** को शरीर और प्राणशक्ति की स्थितिशीलता और क्रियाशीलता के एक असामान्य सन्तुलन को साधित करना होता है, वह सन्तुलन असामान्य होते हुए भी महत्तर अवस्था की ओर नहीं बल्कि उच्चता और **आत्म-प्रभुत्व** की ओर उन्मुख होता है।

आसन की निश्चल स्थिति का पहला उद्देश्य यह है कि शरीर पर जो चंचल क्रिया बलात् थोपी जाती है, उससे मुक्त हुआ जाये तथा उसे (शरीर को) बाध्य किया जाये कि यह प्राणशक्ति को बिचोरने और लुटाने के स्थान पर उसे अपने अन्दर धारण करे।

आसन के अभ्यास में जो अनुभव होता है वह यह नहीं है कि **निष्क्रियता** के द्वारा शक्ति निरुद्ध एवं क्षीण होती है, वरन् यह कि इससे शक्ति की मात्रा, उसका **अन्तःप्रवाह** एवं संचार अत्यधिक बढ़ जाता है। पर, क्योंकि हमारा शरीर अतिरिक्त शक्ति को हिलने-डुलने के द्वारा बाहर निकालने का आदी है, अतएव शुरू में वह इस वृद्धि तथा इस धारित अन्तःक्रिया को अच्छी तरह सहन नहीं कर सकता और प्रबल कंपनों के द्वारा इसे बाहर बिखेर देता है।

आगे चलकर वह इसे धारण करने में अभ्यस्त हो जाता है और जब आसन सिद्ध हो जाता है तब वह बैठने के उस विशिष्ट ढंग में भी, जो चाहे आरम्भ में उसके लिये कठिन या अस्वाभाविक ही क्यों न रहा हो, उतना ही आराम अनुभव करता है जितना बैठने या सहारा लेने के सरल-से-सरल ढंगों में। उस पर प्रभाव डालने के लिये बढ़ी हुई प्राण-शक्ति की जितनी भी मात्रा प्रयोग में लायी जाती है, उसे वह धारण करने में उत्तरोत्तर समर्थ होता जाता है और उसे इस **वृद्धिगत** मात्रा को चेष्टाओं के रूप में बहा देने की जरूरत नहीं होती, और शक्ति की यह वृद्धि इतनी विपुल होती है कि इसकी कोई सीमा नहीं दिखायी देती।

फलतः, सिद्ध हठयोगी का शरीर सहिष्णुता और बल तथा अथक शक्ति-प्रयोग के ऐसे करतबों को कर सकता है कि जिन्हें मनुष्य की सामान्य भौतिक शक्तियाँ अपनी **पराकाष्ठा** को पहुँचकर भी नहीं कर सकती।

क्योंकि, वह इस शक्ति को केवल धारण करके सुरक्षित ही नहीं रख सकता, बल्कि **देह-संस्थान** पर इसके प्रभुत्व तथा उसके अन्दर इसकी अधिक पूर्ण गति को सहन भी कर सकता है। इस प्रकार जब **प्राणशक्ति** शान्त और निष्क्रिय शरीर को अपने अधिकार में लेकर एक शक्तिशाली एवं समरस क्रिया के रूप में उस पर कार्य करती है तथा धारक शक्ति और धारित शक्ति के अस्थिर सन्तुलन से मुक्त हो जाती है तो यह एक कहीं अधिक महान् तथा प्रभावशाली शक्ति बन जाती है।

-श्री अरविन्द, 'योग समन्वय' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गुरुदेव का पत्र

आलस्य भी एक प्रकार की हिंसा हैं।

ईश्वर आराधना के बिना मोक्ष नहीं

× ×

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में स्पष्ट कहा है कि ब्रह्मलोक तक के सभी लोक पुनरावर्ती स्वभाव वाले हैं। गीता के 8वें अध्याय के 16वें श्लोक में भगवान ने कहा है:-

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते॥16॥

हे अर्जुन, ब्रह्मलोक से लेकर सब लोक पुनरावर्ती स्वभाव वाले हैं, परन्तु हे कुन्तीपुत्र मेरे को प्राप्त होकर पुनर्जन्म नहीं होता। इसे और स्पष्ट करते हुए भगवान ने 9वें अध्याय के 25वें श्लोक में कहा है:-

यान्ति देवव्रता देवान् पितॄन्यान्ति पितृव्रताः।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्॥

देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं, पितरों के पूजनेवाले पितरों को प्राप्त होते हैं, भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं, (और) मेरे भक्त मेरे को ही प्राप्त होते हैं।

इतना स्पष्ट होने पर भी इस युग का मानव समझ नहीं पा रहा है, और विभिन्न प्रकार के देवताओं के चक्कर में फंसा पड़ा है।

मूलाधार से लेकर आज्ञाचक्र पर्यन्त सभी आराधनाएं निकृष्ट श्रेणी में आती हैं। आज्ञाचक्र का भेदन गुरुकृपा के बिना सम्भव नहीं है। अतः आध्यात्म जगत में संत सतगुरु की कृपा के बिना चलना असम्भव है। इस कलियुग का मानव युग के गुण धर्म के कारण गुरु-शिष्य परम्परा में विश्वास नहीं करता। इसके अलावा इस युग में सात्विक संतों का नितान्त अभाव हो चला है। कपटी गुरुओं से ठगाते 2 इस युग के मानव का गुरु भाव पूर्ण रूप से समाप्त हो चुका है। ऐसी स्थिति में संसार के जीवों का कल्याण असम्भव हो चला है। ईश्वरीय शक्ति के अवतरण के बिना अब काम चलने वाला नहीं

[signature]
06.5.88

चेतना का विज्ञान

श्री अरविन्द
'मानव से अतिमानव की ओर'

भौतिक विज्ञान है भौतिक प्रक्रियाओं का ज्ञान जो अनिवार्य रूप से कार्य और भौतिक प्रक्रियाओं के उपयोग की ओर ले जाता है। हो सकता है कि वे वैज्ञानिक केवल वैज्ञानिक सत्य को ही देखें, उपयोगिता को नहीं, लेकिन वह केवल वस्तुओं की प्रक्रिया के सत्य को पा सकता है, वस्तुओं की प्रकृति के सत्य को नहीं।

अनिवार्य रूप से उसके अन्वेषण कार्य के लिये उपयोगिता को खोज निकालते हैं क्योंकि प्रक्रियाओं का समस्त सत्य कार्य के लिये उपयोगिता है। जब ये विज्ञान के लक्ष्य न हों तब भी प्रक्रिया और उपयोगिता भौतिक विज्ञान की आत्मा और शरीर है।

स्वयं भौतिक द्रव्य आत्मा या सत्ता या प्रकृति की भौतिक प्रक्रिया और क्रिया के लिये उपयोगिता है। भौतिक ऊर्जा उस उपयोगिता के लिये सहायक गति की अथवा आदि गति की है जिसमें अपनी क्रियाओं का कोई अन्य भाव नहीं है।

हम एक उच्चतर भाव तक तभी पहुँचते हैं, जब हम भौतिक ऊर्जा के परे मानसिक, चैत्य और आध्यात्मिक ऊर्जा, मन और अंतरात्मा और आत्मा तक पहुँच जाते हैं।

यह विवादास्पद है कि अगर हम भौतिक द्रव्य के असली सारतत्त्व को और मन, अंतरात्मा और आत्मा के भौतिक और क्रियाओं के साथ आधारभूत संबंध को, केवल आभासी को नहीं जानते तो क्या हम भौतिक प्रक्रिया और क्रिया के अनंतगुने अधिक समर्थ उपयोग तक न पहुँच पाते। बहरहाल, इन चीजों का भौतिक विज्ञान पता नहीं लगा सकता क्योंकि उसकी अपनी सीमाएँ हैं और वह अपनी सीमाओं का अतिक्रमण नहीं कर सकता।

मनोविज्ञान एक प्राकृतिक विज्ञान के रूप में शुरू हो सकता है लेकिन वह अब भी अतिभौतिक के साथ संबंध रखता है और उसका अंत अतीन्द्रिय या तात्त्विक खोज में होना चाहिये। अगर वह जिस प्रक्रिया का अध्ययन करता है, उसका एक पार्श्व और अन्वेषण विधि भौतिक है तो दूसरा और अधिक महत्त्वपूर्ण भाग अभौतिक है। वह है बिना किसी दैहिक उपाय, सहारे, आधार या माध्यम की सहायता के द्वारा मानसिक कार्यों का प्रत्यक्ष अवलोकन।

अगर प्रथम स्थान पर यह प्रक्रिया का अध्ययन है और इसमें मनोवैज्ञानिक क्रिया के लिये उपयोगिता का अंतर्निहित है तो वह अनिवार्य रूप से जिस ओर ले जाता है वह क्रिया नहीं बल्कि मानसिक चेतना के स्वभाव की खोजबीन है।

इस आवश्यकता का प्रार्दुभाव होता है मन के इस तत्काल बोध से कि उसकी क्रियाओं के परे और पीछे कोई चीज है, हमारी प्रकट मानसिकता से अधिक बड़ी चेतना की छिपी हुई कोई ऊर्जा है। यह जानने के लिये कि वह क्या है हमें तात्विक खोजबीन की शरण लेनी होती है।

पता चलता है कि स्वयं चेतना तत्त्वतः कोई प्रक्रिया नहीं है। यद्यपि मन में वह प्रक्रिया-सी प्रतीत होती है, वह स्वयंभू सत्ता का अपना स्वभाव है। वस्तुओं की सत्ता या उनकी आत्मा को केवल तात्विक ज्ञान द्वारा ही जाना जा सकता है, यह आवश्यक नहीं कि वह बौद्धिक हो।

इस आत्म-ज्ञान के दो अविभाज्य पक्ष हैं-एक तो सत्ता की प्रक्रिया का मनोवैज्ञानिक ज्ञान और दूसरा उसके तत्वों में से एक है ऊर्जा। ऊर्जा सचेतन सत्ता की शाश्वत और अंतर्निहित शक्ति है, चूंकि सारी ऊर्जा कार्य में बदली जा सकती है। अतः इस ज्ञान में भी मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक उपयोगिता का पक्ष होता है-अंततः, चूंकि प्राण और शरीर, सत्ता की ऊर्जा के परिणाम हैं और उसकी क्रियाओं के सहारे हैं, शायद प्राणिक और भौतिक उपयोगिता के भी।

मनोविज्ञान के आगे दो महान् उपयोगिताएँ खुलती हैं, हम सचेतन रूप से अपनी आदि स्वयंभू सत्ता भगवान्, निरपेक्ष, परात्पर साथ एक होने की प्रक्रिया या मनोवैज्ञानिक उपायों की संभावना की ओर खुल सकते हैं। वेदान्ती मनोविज्ञान का लक्ष्य है-इन संभावताओं तक ले जाना।

समस्त मनोविज्ञान के परिणाम और मनोवैज्ञानिक सत्य के पूर्ण वक्तव्य में उसके चौखट के रूप में अस्तित्त्व की दोहरी योजना होनी चाहिये जिसमें उसके साथ संबंध रखनेवाले तथ्य समा जाएँ, एक चढ़ता हुआ सोपान दूसरा उतरता हुआ सोपान।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे....

अहं से मुक्ति

इस मार्ग में हम कर्ममार्ग की भांति कर्ता होने के "**अहंभाव**" से मुक्त हो जाते हैं और यह देखने लगते हैं कि केवल कार्यवाहिका प्रकृति-शक्ति अथवा उसकी पराशक्ति ही एकमात्र **कारण और कर्त्री** है-इतना ही नहीं,बल्कि हम उस **अहंबुद्धि** से भी मुक्त हो जाते हैं, जो भूल से हमारी सत्ता के कारणों या अभिव्यक्त रूपों को हमारी सच्ची सत्ता एवं आत्मा समझती है।

पर यद्यपि यह सब अहं समाप्त हो जाता है, फिर भी अहं का कोई रूप शेष रह जाता है; इन सबका एक आधार, पृथक् अहं का एक सामान्य भाव, बचा रह जाता है। यह आधारभूत अहं एक अनिश्चित, अनिर्देश्य एवं प्रतारक वस्तु है; यह किसी विशेष वस्तु को आत्मा मानकर उसके साथ अपने को **आसक्त** नहीं करता अथवा इसे ऐसा करने की जरूरत नहीं; यह किसी **समष्टिभूत** वस्तु के साथ भी तादात्म्य स्थापित नहीं करता; यह मन का एक प्रकार का आधारभूत रूप या शक्ति है जो मनोमय पुरुष को यह अनुभव करने के लिये बाध्य करती है कि मैं शायद एक **अनिर्देष्य**, पर फिर भी सीमित सत्ता हूँ जो मन, प्राण या शरीर नहीं है, पर जिसके अधीन प्रकृति में इनकी क्रियाएँ प्रकट होती हैं।

अन्य अहंताएँ तो परिमित अहं-भावना और अहं-बुद्धि थी, जो प्रकृति की **क्रीड़ा** पर ही अपना आधार रखती थी; पर यह अहंता शुद्ध मूलभूत अहं-शक्ति है जो **मनोमय पुरुष** की चेतना पर अपना आधार रखती है। और, क्योंकि यह खेल के अन्दर नहीं, बल्कि इसके ऊपर या पीछे अवस्थित प्रतीत होती है, क्योंकि यह ऐसा नहीं कहती कि "**मैं मन, प्राण या शरीर हूँ**", बल्कि ऐसा कहती है कि "मैं एक ऐसी सत्ता हूँ जिस पर मन, प्राण और शरीर की क्रिया निर्भर करती है", बहुत-से साधक अपने को मुक्त समझ बैठते हैं और इस प्रतारक अहं को अपने अन्दर विद्यमान '**एकं सत्**', भगवान, सच्चा पुरुष या कम-से-कम सच्चा 'व्यक्ति समझने की भूल करते हैं-भ्रांतिवश '**अनिर्देश्य** ' को '**अनन्त**' समझ लेते हैं। परन्तु जब तक यह मूलभूत अहंभाव का सहारा लेकर भी अपना काम काफी अच्छी तरह से चला सकता है, उसका बल और वेग भले ही कुछ कम हो जायें।

पर यदि हम भ्रान्तिवश इस अहं को ही अपनी आत्मा समझ लें तो इसकी आड़ में **अहंमय जीवन** और भी अधिक बल-वेग प्राप्त कर सकता है।

यदि हम ऐसी किसी भ्रान्ति में न पड़ें तो अहंमय जीवन अधिक शुद्ध और विशाल तथा अधिक नमनीय बन सकता है और तब मुक्ति प्राप्त करना कहीं अधिक आसान हो सकता है और उसकी पूर्णता अधिक निकट आ सकती है, किन्तु फिर भी **निश्चयात्मक मुक्ति** अभी प्राप्त नहीं हुई है।

हमें तो, अनिवार्यतः, इस अवस्था से भी आगे बढ़ना होगा, इस अनिर्देश्य पर आधारभूत अहं भावना से भी मुक्त होकर इसके पीछे अवस्थित उस पुरुष को प्राप्त करना होगा जो इसका आधार है और जिसकी यह एक छाया है; को विलुप्त हो जाना होगा और अपने विलोप के द्वारा आत्मा के अनावृत मूलतत्त्व को प्रकट करना होगा।

वह तत्त्व मनुष्य की आत्मा है जिसे यूरोपीय विचारधारा में **शक्त्यणु** (Monad) और भारतीय दर्शन में जीव या जीवात्मा, अर्थात् जीवात्मक सत्ता या प्राणी की आत्मा कहते हैं। यह जीव वह **मानसिक अहंभाव** नहीं है जिसे प्रकृति ने अपनी क्रियाओं के द्वारा अपने अल्पकालीन प्रयोजन के लिये निर्मित किया है। यह कोई ऐसी सत्ता नहीं है जो मानसिक, प्राणिक और शारीरिक सत्ता की भांति उसके अभ्यासों और नियमों से या उसकी प्रक्रियाओं से बंधी हुई हो।

जीव तो अध्यात्म सत्ता एवं आत्मा है जो **प्रकृति से उच्चतर है**। यह सच है कि यह उसके कार्यों को अनुमति देता है, उसकी अवस्थाओं को अपने में प्रतिबिम्बित करता है तथा मन, प्राण और शरीर के उस **त्रिविध माध्यम** को धारण करता है जिसके द्वारा वह उन अवस्थाओं को अन्तरात्मा की चेतना पर प्रक्षिप्त करती है। पर जीव अपने-आप में विराट् और **परात्पर आत्मा का सजीव प्रतिबिम्ब अथवा आन्तरात्मिक रूप या आत्म-सृष्टि है**।

एकमेव आत्मा जिसने अपनी सत्ता के कुछ एक गुणों को विश्व में और आत्मा में प्रतिबिम्बित किया है, जीव में अनेकविध रूप धारण किये हुए हैं।

-श्री अरविन्द, 'योग समन्वय' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे....

समाधि

समाधि की अवस्था में जीवन का त्याग करने से वह सीधे ही सत्ता की उस उच्चतर भूमिका को प्राप्त कर लेता है, जिसकी वह अभीप्सा करता है।

स्वप्नावस्था की शक्तियों पर पूर्ण स्वामित्व प्राप्त करने के लिये स्थूल इन्द्रियों पर बाह्य जगत् के रूपों, शब्दों आदि के आक्रमण को दूर करना सर्वप्रथम आवश्यक है। निःसन्देह स्वप्न-समाधि में सूक्ष्म शरीर से संबद्ध सूक्ष्म इन्द्रियों के द्वारा बाह्य स्थूल जगत् का ज्ञान प्राप्त करना सर्वथा सम्भव है; मनुष्य जहाँ तक चाहे वहीं तक और जाग्रत् अवस्था की अपेक्षा कहीं अधिक विस्तृत परिमाण में बाह्य जगत् के रूपों, शब्दों आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

क्योंकि स्थूल भौतिक इन्द्रियों की अपेक्षा सूक्ष्म इन्द्रियों का क्षेत्र कहीं अधिक महान् है, वह एक ऐसा क्षेत्र है जिसे कार्यतः असीम बनाया जा सकता हैं परन्तु सूक्ष्म इन्द्रियों के द्वारा स्थूल जगत् का यह जो ज्ञान प्राप्त होता है वह स्थूल इन्द्रियों से प्राप्त हमारे सामान्य जगत्-ज्ञान से सर्वथा भिन्न होता है; इनमें से पिछला समाधि की सुस्थिर अवस्था से मेल नहीं खाता, स्थूल इन्द्रियों का दबाव समाधि को भंग कर देता है और मन को उसके सामान्य क्षेत्र में जीवन यापन करने के लिये वापस बुला लाता है क्योंकि वे अपनी शक्ति का प्रयोग केवल इसी क्षेत्र में कर सकती है।

परन्तु सूक्ष्म इन्द्रियाँ अपने स्तरों तथा इस स्थूल जगत् दोनों में अपनी शक्ति को प्रकट कर सकती हैं, यद्यपि यह उनकी अपनी सत्ता के लोक की अपेक्षा उनके लिये अधिक दूर है। स्थूल इन्द्रियों के द्वारों को बन्द करने के लिये योग में अनेक प्रकार के उपाय काम में लाये जाते हैं जिनमें सबके कुछ तो भौतिक उपाय ही हैं; परन्तु एकमात्र सर्वसमर्थ साधन है एकाग्रता की शक्ति जिसके द्वारा मन को भीतर की ओर गहराइयों में ले जाया जाता है, जहाँ स्थूल पदार्थों की पुकार उस तक पहले की तरह आसानी से नहीं पहुँच सकती।

स्वप्नावस्था की शक्तियों पर पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त करने के लिये दूसरा आवश्यक कार्य स्थूल निद्रा के हस्तक्षेप से छुटकारा पाना है। मन जब स्थूल पदार्थों के सम्पर्क से विमुख होकर भीतर जाता है तो वह अपने साधारण स्वभाव के अनुसार निद्रा की जड़ता में या उसके स्वप्नों में जा पड़ता है, और जब उसे समाधि के प्रयोजनों के लिये भीतर की ओर पुकारा जाता है तो वह अभीष्ट प्रत्युत्तर नहीं देता या देने में प्रवृत्त नहीं होता बल्कि पहले अवसर पर तो निरी स्वभाव की शक्ति के वश की स्थूल तन्द्रारूपी साधारण प्रत्युत्तर देता है या देने में प्रवृत्त होता है।

मन के इस स्वभाव से छुटकारा पाना होगा; मन को स्वप्नावस्था में जाग्रत रहना तथा अपने ऊपर स्वामित्व रखना सीखना होगा, पर वह जाग्रत अवस्था बहिर्मुख नहीं अन्तर्मुख होनी चाहिये जिसमें वह अपने अन्दर डूबा रहकर भी अपनी समस्त शक्तियों का प्रयोग कर सके।

स्वप्नावस्था के अनुभव अनन्त प्रकार के होते हैं। क्योंकि यह सामान्य मानसिक शक्तियों अर्थात् तर्क, विवेक, संकल्प और कल्पना के ऊपर परम प्रभुत्व रखती है तथा इन्हें चाहे किसी भी ढंग से, किसी भी विषय पर और किसी भी उद्देश्य के लिये प्रयोग में ला सकती है, इतना ही नहीं, बल्कि यह उन सब लोकों के साथ, भौतिक से लेकर उच्चतर मानसिक लोकों तक के साथ, सम्बन्ध भी स्थापित कर सकती है जिन तक इसकी स्वाभाविक पहुँच है या जिन तक पहुँच पाना यह पसन्द करती है।

ऐसा यह उन अनेक साधनों के द्वारा करती है तो स्थूल बहिर्मुखी इन्द्रियों की संकीर्ण सीमाओं से मुक्त इस अन्तर्मुखा मन की सूक्ष्मता, नमनीयता और सर्वग्राही गति के लिये सुलभ होते हैं। सर्वप्रथम, यह सभी वस्तुओं को वे चाहे भौतिक जगत् की हों या अन्य स्तरों की, अनुभवगम्य प्रतिमूर्तियों की सहायता से जान सकती है; ये प्रतिमूर्तियाँ दृश्य वस्तुओं की ही नहीं बल्कि शब्द, स्पर्श, गन्ध, रस, गति, क्रिया तथा उन सब वस्तुओं की भी होती हैं जो मन और उसके कारणों के लिये गोचर हो सकती हैं।

क्योंकि समाधि की अवस्था में मन आन्तरिक आकाश तक, जिससे कभी-कभी चिदाकाश भी कहते हैं, पहुँच जाता है, अर्थात् वह अधिकाधिक सूक्ष्म होते जानेवाले आकाश की उन गहराइयों तक पहुँच जाता है जिनके और भौतिक इन्द्रियों के बीच में जड़ जगत् के स्थूलतर आकाश का घना पर्दा पड़ा हुआ है, और सभी इन्द्रिय-गोचर वस्तुएँ, वे चाहे स्थूल लोक की हों या किसी अन्य लोक की, इस सूक्ष्म आकाश में अपना पुनरावर्ती प्रतिमाओं का सृजन करती हैं। यह सूक्ष्मतर आकाश इन स्पन्दनों आदि को ग्रहण करके अपने अन्दर धारण करती है।

-श्री अरविन्द, 'योग समन्वय' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा व कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है। उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है। इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता की पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम** सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस दिव्य ज्ञान का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र** नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों-**आदि भौतिक, आदि दैहिक व आदि दैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन (नाश) करता है।

इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व वैज्ञानिक समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो? **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता** एवं **याददाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए **'भोग एवं मोक्ष'** दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- वैदिक दर्शन द्वारा ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एंव साक्षात्कार।

❖❖❖

www.the-comforter.org

आराधना द्वारा प्रातिभ ज्ञान की प्राप्ति

इस योग में अन्दर और बाहर दोनों का विकास एक साथ होता है और साथ ही साथ आध्यात्मिक चेतना आती है, भौतिक रूप से शांति होती है।

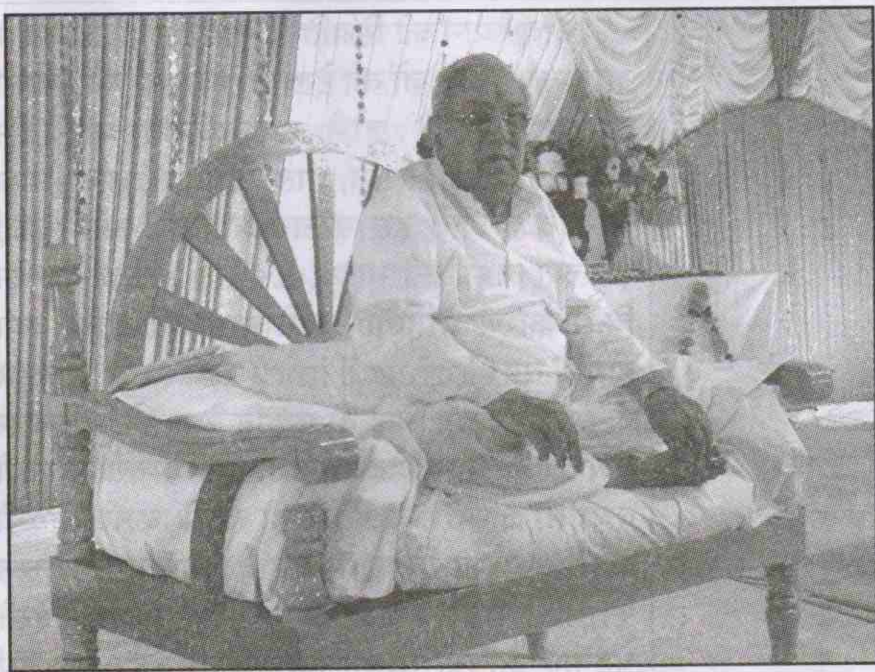

अब आराधना में मैंने आपको बताया कि आप आराधना करोगे तो पातंजलि योग दर्शन में जो सिद्धियाँ वर्णित हैं, वह सब आपको हासिल होगी। **इस योग में अन्दर और बाहर दोनों का विकास एक साथ होता है और साथ ही साथ आध्यात्मिक चेतना आती है,** भौतिक रूप से शांति होती है।

देखिए पातंजलि योग दर्शन में चार भाग हैं- समाधि पाद, साधन पाद, विभूतिपाद और कैवल्य पाद। विभूतिपाद तीसरा पाद है उसमें साधक को क्या-क्या सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं-उसका वर्णन आता है।

इस आराधना से आपको सारी सिद्धियाँ मिलेगी। उसमें एक ज्ञान प्राप्त करने की बात है विभूति पाद में 33 और 36 दो सूत्रों में उसका वर्णन आता हैं। उस ज्ञान का नाम है प्रातिभ ज्ञान। ऋषि ने उसको प्रातिभ ज्ञान की संज्ञा दी है। वह स्वतः प्राप्त होता है-आराधना में।

जब प्रातिभ ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो साधक को छह प्रकार की सिद्धियाँ हो जाती हैं। उनमें से पहली सिद्धि है-ध्यान व समाधि की स्थिति में अनिश्चित काल के भूत भविष्य को देखना-सुनना (Unlimited Past and Future)। उसका Self Realization and self visulisation (प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार) करना। भौतिक Science (विज्ञान) मानती है और इस सिद्धान्त को स्वीकार कर चुकी है कि जो शब्द बोला गया है, वो ब्रह्माण्ड में रहता है। अगर प्रोपर मशीन हो तो उसे सुना जा सकता है।

हमारा योग दर्शन कहता है कि जब ब्रह्माण्ड में शब्द है तो बोलने वाला भी रहा होगा? उसके बिना शब्द कहाँ से आया? उसको बोलते हुए देखा सुना जाना संभव है। आगे कहता है कि वह तो Past है वह तो फिल्म पहले बन गई। वह तो Done to done हो गई। अब वो undone नहीं हो सकता। अनिश्चित काल के भविष्य को देखा-सुना जाना संभव है।

मैं नहीं कह रहा, पातंजलि ऋषि ने विभूतिपाद के 33 और 36 दो सूत्रों में यह बात कही है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

"ध्यान और समाधि अवस्था में भविष्य को देखना"

यह जो दिख रहा, वही सत्य हो रहा है और उस वक्त कहीं ख्याल आ गया, यह जा रहे हैं तेरे को भी जाना है। But Natural(लेकिन प्राकृतिक) है याल आएगा ही आएगा तो आप को पता लग जाएगा कैसे जाओगे ? किस उम्र में जाओगे ? जीते-जी मृत्यु से साक्षात्कार हो जाएगा।

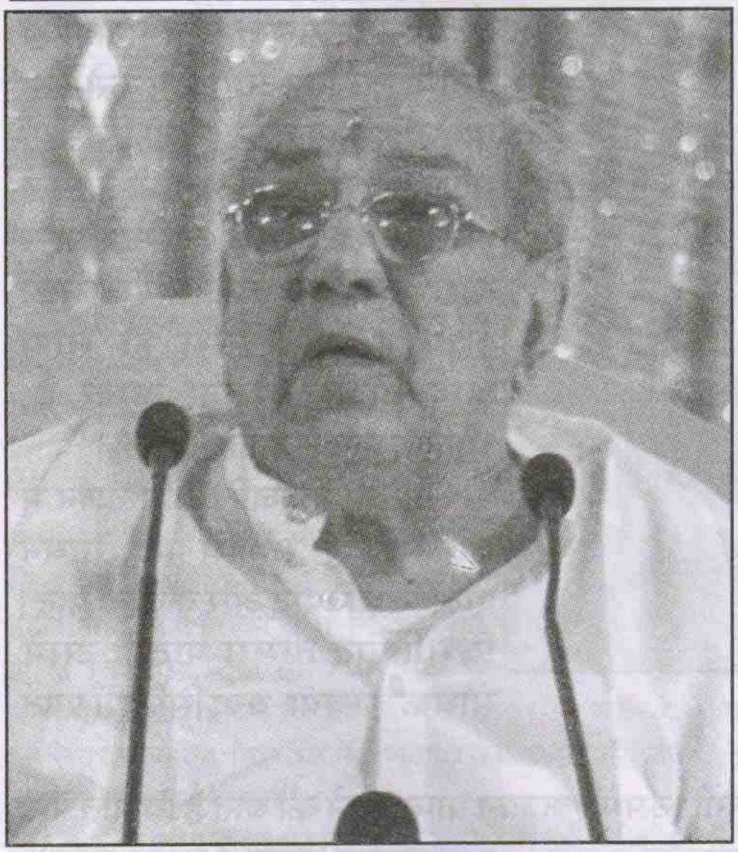

अब ध्यान की स्थिति में, समाधि की स्थित में आप जब इन चीजों को देखोगे, भविष्य को देखोगे तो भविष्य में होने वाले सारे परिवर्तन देखोगे-जन्मना, मरना, घात-प्रतिघात, घाटा-नफा सारे दिखेंगे तो इस प्रकार आपको, अपने कई परिचित लोगों की मृत्यु (Death) दिख गई कि किस कारण से होगी। अप्रोक्समेटली.... उम्र क्या होगी ? वह Correct Time (सही समय) मालूम नहीं कर सकोगे। वह तो प्रकृति ने अपने अधिकार में रखा है। एक्सीडेंट से होंगी कि बीमारी से होगी क्या होगा और वह वैसे ही होती चली जाएगी क्योंकि मरना तो सभी को है। सबका निश्चित Time (समय) है। एक की नहीं, सैकड़ों ऐसी घटनाएँ आपके सामने आएगी तो बड़ा आश्चर्य होगा। यह मामला तो गड़बड़ है। यह जो दिख रहा, वही सत्य हो रहा है और उस वक्त कहीं ख्याल आ गया, यह जा रहे हैं तेरे को भी जाना है। But Natural(लेकिन प्राकृतिक) है। ख्याल आएगा ही आएगा तो आप को पता लग जाएगा कैसे जाओगे ? किस उम्र में जाओगे ? जीते-जी मृत्यु से साक्षात्कार हो जाएगा।

जब दूसरों वाली घटनाएँ सही हो रही हैं तो आप वाली गलत कैसे होगी ? तब फिर आदमी घबरा जाता है। मौत से बहुत डरता है। कोई नहीं मरना चाहता, मगर एक भी न बच पा रहा हैं। अब जब बच भी नहीं पा रहे हो तो डरते क्यूँ हो भाई ? पर माया ने एक ऐसा आवरण आपके चारों तरफ कर दिया है कि **मौत रूपी जो वरदान है,** वह जन्म-मरण के चक्र को छुड़वाता है। उसकी शक्ल बड़ी भयावनी दिखाई देती है। आप उसको स्वीकार नहीं करना चाहते। आप इसी जगत् में रहना चाहते हैं, मगर फिर भी वह ले जाती है।

जब आदमी को पता लगेगा कि मेरी इस तरह से **Death** (मृत्यु) होगी तो घबरा जाता है, बड़ा गंभीर होता है। फिर भगवान् से प्रार्थना करता है कि हे भगवान् ! किसी तरह बचा ले ! क्योंकि जब मौत सामने आती है तो जीवन भर किये-कराये वह सब सामने आ जाते हैं। दुनिया को झाँसा दे सकता है। अपने आप को कैसे देगा, वह जो खोटे किये हैं। मनुष्य अपनी तस्वीर देखकर घबराता है। वह बड़ा Concentrate (एकाग्र) हो जाता है-हे भगवान्, बचा ले ! जैसे ही Serious(गंभीर) हुआ कि कुण्डलिनी सहस्रार में पहुँच जाती है। मृत्यु का रहस्य समझ में आ जाता है।

-समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

अपने वास्तविक स्वरूप में रूपान्तरण

कबीरदास जी ने एक जगह कहा है-

जहाँ मरने से जग डरे, मोरे मन आनन्द।
कब मरीयो कब पाइयो पूरण परमानंद।।

तो इस वक्त, इस तरह आप जो आराधना करोगे उससे आपका माया का आवरण क्षीण हो जाएगा। आप प्रकृति के रहस्य को खुली आँखों से देख सकोगे फिर उस मौत से डरोगे नहीं, बेसब्री से उसका इंतजार करोगे।

कबीर बेचारे बड़े रहस्य वादी संत थे, गुरु नहीं थे इसलिए उनमें जो परिवर्तन आया वह तो आ गया, मगर वह किसी दूसरे में परिवर्तन नहीं कर सके।

उन्होंने जो वाणियों में गाया है, स्पष्ट शब्दों से बोला है। एक वाणी में गाया-

'जल बिच कुम्भ, कुम्भ बिच जल है,
बाहर भीतर पानी।
विगटा कुम्भ जल जल ही समाना,
ये गति विरले जानी।।

मतलब पानी से घड़ा भरा हुआ है, पानी के अन्दर रखा हुआ है-तालाब में। वह कहते है-पानी से भरा हुआ घड़ा, तालाब के अन्दर रखा है, अगर घड़ा गल जाए तो बाहर वाले पानी व अन्दर वाले पानी में भेद नहीं कर सकोगे, वह एक हो गया तो भइया यह शरीर रूपी घड़ा गल जाएगा तो आप अपने असली Form (स्वरूप) में बदल जाओगे फिर आश्चर्य नहीं है, यह कोई अचम्भा नहीं है। मनुष्य अपने असली स्वरूप में बदल जाएगा।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

सम्पादकीय शेष पृष्ठ 5 का...

स्वामी जी ने एक और सटीक बात कही कि-''समस्त संसार हमारी मातृभूमि का महान् ऋणी है। किसी भी देश को ले लिजिए, इस जगत् में एक भी जाति ऐसी नहीं है, जिसका संसार उतना ऋणी हो, जितना कि वह यहाँ के धैर्यशील और विनम्र हिन्दुओं का है।''

स्वामी श्री विवेकानंद जी व महर्षि श्री अरविंद घोष भारत की ऐसी दो महान् आत्माएँ थी, जो स्वर्णयुगीन भारत के भोर की नूतन किरण की नूतन रोशनी के संदेशवाहक बनकर आए,जिन्होंने भारत के भूमण्डल पर भागवत सत्ता के भौतिक देह के अवतरण को सार्थक बनाया। **अब ''भारत'', ''भारत '' बनेगा, यूरोप की कार्बन कॉपी नहीं।**

स्वामी जी ने भारत की प्रकृति पर बोलते हुए कहा था कि भारतीय राष्ट्र कभी बलशाली, दूसरों को पराजित करनेवाला राष्ट्र नहीं बनेगा-कभी नहीं। **वह कभी भी राजनीतिक शक्ति नहीं बन सकेगा;** ऐसी शक्ति बनना उसका व्यवसाय ही नहीं, राष्ट्रों की संगीत-संगति में भारत इस प्रकार का स्वर कभी दे ही नहीं सकेगा।

पर आखिर भारत का स्वर होगा क्या? -वह स्वर होगा **''ईश्वर''**, केवल ईश्वर का।

भारत उससे कठोर मृत्यु की तरह चिपका हुआ है। और आज हम भारत के वर्तमान परिपेक्ष्य में देखों तो राजनीति के सिवाय कुछ नजर ही नहीं आ रहा है। चारों ओर राजनीतिक पार्टियों के आपसी वेमनस्य और कलह का कोलाहल मचा है। धर्म और दर्शन दूर तक नजर नहीं आ रहे हैं।

ऐसा प्रतीत हो रहा है कि स्वामीजी के श्राप के अनुसार भारत में कभी भी राजनीतिक स्थिरता नहीं आएगी, जब तक वे लोग भारत की असली आत्मा को नहीं समझेंगे। आज भारत की पूण्य भूमि पर जातिय ध्रुवीकरणों के ज्वालामुखी फूट रहे हैं।

लेकिन इस भूमण्डल पर अवतरित भागवत शक्ति शीघ्र ही पुरातन-सनातन धर्म की सभ्याता और संस्कृति को सिद्धयोग के बल से सम्पूर्ण विश्व में पुनः स्थापित करेगी। जिसको दुनिया की कोई ताकत नहीं

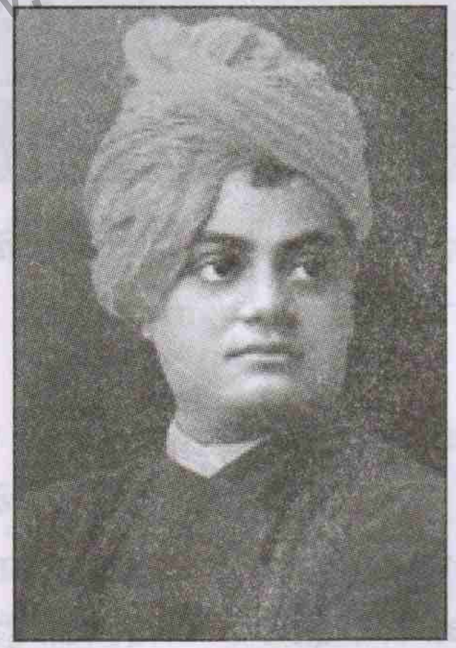

रोक सकेगी।

श्री अरविंद ने बंगाल के उत्तरापाड़ा नामक जगह पर अलीपुर जेल से निकलने के बाद 1908 में अपना पहला भाषण दिया जिसमें- भारत में भगवान् के पुनः अवतरण व स्वर्ण और रूपान्तरित भारत की झांकी, स्पष्ट दिखाई देती है- **''हमारे धर्म में उच्चारण को उतना महत्त्व नहीं है, जितना आचरण को है।''**

प्राचीन काल में हमारे ऋषि-मुनि गहन अरण्यों में रहते थे। वहाँ एकांतवास में वे वर्षों तक चिंतन-मनन करने थे। उस संपूर्ण मानवता के वास्तविक कल्याण के मार्ग उन्होंने देखे। वाणी द्वारा उन्हीं का दर्शन, उन्होंने जनता को कराया। इस प्रकार अपने इस धर्म का निर्माण होता रहा...

'अपने इस सनातन धर्म का प्रचार विश्व भर में करने के लिये ही आज भारतवर्ष जाग्रत हो रहा है। **संपूर्ण विश्व के सुख और आनंद के लिये ही भारत-वर्ष का उत्थान हो रहा है।** संध्याकाल में हमारे देश की जागृति केवल हमारे सुख के लिये नहीं है। दूसरों को कुचलने के लिये तो वह निश्चित ही नहीं है। चिरंतनकाल से भारतवर्ष ने संपूर्ण मानव जाति का हित करने की आकांक्षा ही अपने हृदय में संजोई है। पृथ्वी पर भारत का अस्तित्व ही परमार्थ कार्य के लिए है।

'भारत के उत्थान का अर्थ है, हमारे सनातन धर्म का उत्थान। भारत की महानता का अर्थ है, हमारे सनातन धर्म की महानता। परमेश्वर ने इस विश्व में धर्म की महानता संस्थापन करने के लिये ही भारतवर्ष की योजना की है। **हमारा धर्म चिरकालिक धर्म है।**

वह विश्व के सब देशों का, सब कालों में उपकारक है। दुनिया में यही एक धर्म है, जो **अपने उपासकों को भगवान् के निकट ले जाता है,** और उनसे प्रत्यक्ष भेंट कराता है। सत्य का वास्तविक आग्रह यही धर्म कराता है। सत्य का वास्तविक मार्ग यही धर्म दिखाता है।

हमारा धर्म कहता है, कि भगवान् केवल मानवों में नहीं, वे पशु-पक्षियों में, कृमिकीटकों में, घट-घट में और कण-कण में विराजमान है। **करने, कराने वाला सब कुछ भगवान् हैं।**

www.the-comforter.org

ऐसी महान श्रद्धा केवल हमारा धर्म, हमें मृत्यु के उस पार ले जाता है, और अमरता से साक्षात्कार कराता है। दुनिया में इस ढंग का यही एक धर्म है...।'

'राष्ट्रीयता का मतलब केवल राजनीति से नहीं है। राष्ट्रीयता का मतलब है-हमारा धर्म। राष्ट्रीयता ही हमारा उपासना पंथ है। राष्ट्रीयता ही हमारी श्रद्धा है। यही बात दूसरे शब्दों में इस प्रकार कही जा सकती है। हमारा सनातन धर्म ही हमारी राष्ट्रीयता है।' इस हिन्दू राष्ट्र का जन्म सनातन धर्म के साथ ही हुआ है। सनातन धर्म की छत्र-छाया में ही इस हिन्दू राष्ट्र की प्रत्येक चाल-ढाल और प्रत्येक व्यापार विकसित हुआ है। इस सनातन धर्म के मार्गदर्शन में ही हिन्दू राष्ट्र का विकास सुनिश्चित है।

'जब कभी यह राष्ट्र अपने सनातन धर्म से दूर हटेगा, तब इसका अध:पतन होगा और यदि किसी समय सनातन धर्म का विनाश संभव हो तो समझ लीजिए कि उसके साथ-साथ इस राष्ट्र का विनाश भी अटल है। सनातन (हिन्दू धर्म) ही भारत की राष्ट्रीयता है। प्रभु ने मुझे कारागार में ही आदेश दिया है।'

''बंकिमचन्द्र चटर्जी का **वन्दे-मातरम् गीत** हम केवल ऊपरी भाव से गाते हैं। जिस दिन वह हमारे हृदय में गहरा पैठेगा, उसी दिन हमें मातृ शक्ति के दर्शन होंगे। उसी क्षण हमारे अंत:करण में स्वदेशप्रेम तथा बंधुत्वभाव का उदय होगा। स्वदेश ही मेरी माता है। स्वदेश ही मेरा परमेश्वर है। हमारे राष्ट्रीय उद्धार का बीज इसी शिक्षा में है। प्रत्येक मनुष्य, परमेश्वर का अंश है। तीस कोटि भारतवासियों की जननी हमारी हिन्द माता है। उसकी पूजा और सेवा करने से, तथा उसके चरणों में आत्म समर्पण करने से ही, हमारा व्यक्तिगत एवं राष्ट्रीय उत्थान निहित है।' लेकिन सच्चा समर्पण समर्थ सद्गुरुदेव की कृपा दृष्टि बिना असंभव है।

आज हमारा संपूर्ण देश तमोगुण से घिर गया है। हमें उस तमोगुण को हटाकर सतोगुण को प्रस्थापित करना होगा। हमारे लिये

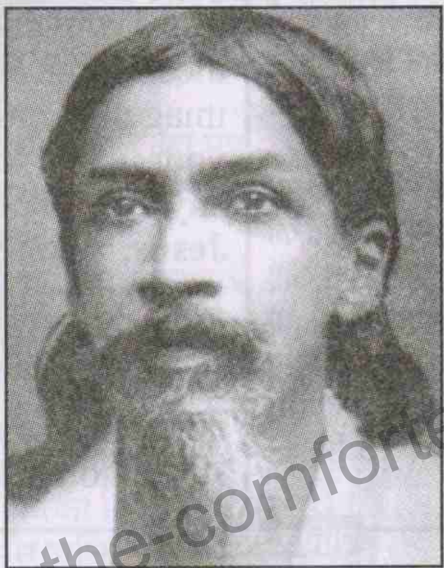

दूसरा तरुणोपाय नहीं है। उसके लिए हमें अंतर्मुखी बनना पड़ेगा। उसके लिये हमें **गहन तपश्चया** करनी होगी तथा **ब्रह्मतेज** प्राप्त करना होगा। हर किसी **अंत:करण** में नारायण का वास है।

जब तक हम उस सर्वभूतस्थ नारायण की निष्ठापूर्वक सेवा नहीं करते, तब तक न हम सतोगुणी बन पायेंगे और न हमें ज्ञान बल का लाभ होगा। सर्वप्रथम हमें इस सामर्थ्य की प्राप्ति करनी होगी। हमारा नेता केवल **राजनीतिज्ञ होने से काम नहीं चलेगा।** जब तक आध्यात्मिक शक्ति की नींव सुदृढ़ नहीं है, तब तक राजनीति का मंदिर खड़ा नहीं हो सकेगा। समर्थ रामदास और छत्रपति शिवाजी-दोनों एकरूप हो जाय, इसकी आज आवश्यकता है।'' अर्थात् समर्थ रामदास आध्यात्मिक रूप से परिपूर्ण थे और छत्रपति शिवाजी राजनीतिज्ञ धुरन्धर थे। लेकिन समर्थ रामदास और छत्रपति शिवाजी में राजनीति और आध्यात्मिकता दोनों ही गुणों से सराबोर थी। आज उस स्थिति की जरूरत है राजनीति में।

इन दो देवदूतों ने जिस भारत के भविष्य का रेखा चित्र, दुनिया के सामने खींचा था, जो भविष्यवाणी की थी, वही दर्शन आज **सद्गुरुदेव सियाग** के माध्यम से मूर्तरूप ले रहा है। स्वामीजी ने भारत के भविष्य के बारे में कहा था कि- **सौ साल बाद भारत धर्म व दर्शन की परिभाषा सम्पूर्ण विश्व को समझा देगा और यह कार्य गुरुदेव के माध्यम से शुरू हो गया।** अब ऐसा दिव्य उत्थान होगा, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

विश्व में अमन, चैन और सात्विक बदलाव लाने के लिए सद्गुरु आज्ञा का पालन करते हुए, सद्गुरुदेव द्वारा दीक्षांत **संजीवनी मंत्र** का सघन जप और नियमित ध्यान कर अपना विकास करें। एक कहावत है-**आप सुधरे-जुग सुधरा।**

-सम्पादक

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

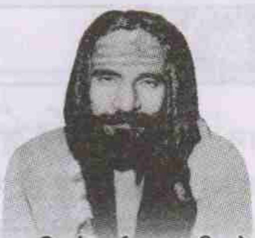

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी
(ब्रह्मलीन)

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? ध्यान करके देखें।

► ध्यान की विधि ◄

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। अपनी समस्या के समाधान हेतु सद्गुरुदेव से करुण प्रार्थना करें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए दिव्य मंत्र का सघन जाप करें।

यदि गुरुदेव से दीक्षित नहीं हैं तो कोई भी ईश्वरीय नाम जैसे- गुरुदेव, राम, कृष्ण, वाहेगुरु, जीसस, अल्लाह आदि का मानसिक जप करें (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

► Method of Meditation ◄

Sit in a comfortable position. Look gurudev's picture for some time then close your eyes and try to imagine gurudev at place between your eyebrows (third eye) and request for 15 minutes of meditation. While thinking of gurudev's image, silently chant (without moving your lips or tongue) gurudev's mantra or any spiritual force (**Ram, Krishna, Jesus, Waheguru, Allah etc.**) which you believe in.

During meditation if you experience any kind of automatic movement then don't try to stop. The movements will stop automatically after 15 minutes.

शक्तिपात–दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (**Enlightened**) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (**Key**) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (**Round the Clock**) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

Web : www.the-comforter.org

जैसलमेर में सिद्धयोग दर्शन का प्रचार-प्रसार 25 दिसम्बर से 2 जनवरी 2018 तक। AVSK बाड़मेर आश्रम में सामूहिक ध्यान करने के बाद जैसलमेर के लिए रवाना हुए। जैसलमेर के सोनार किले में सिद्धयोग दर्शन का प्रचार-प्रसार।

www.the-comforter.org

केम्ब्रिज कॉलेज, बलदेव नगर, बाड़मेर में ध्यान मग्न वेटेनरी नर्सिंग स्टाफ। (5 जनवरी 2018)

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

जैसलमेर में सिद्धयोग दर्शन का प्रचार-प्रसार 25 दिसम्बर 2017 से 2 जनवरी 2018 तक विदेशी सैलानियों को दी कुण्डलिनी जनित सिद्धयोग दर्शन की जानकारी।

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें

Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी
पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान् ______________________

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी